04 - पीकेसी नहीं, दशार्ण जल परियोजना नाम हो

05 - पुरुष भी महिला हिंसा से पीड़ित

A Daily News Magazine
इंदौर
सोमवार, 30 दिसंबर, 2024

06 - वाहन चालक नहीं करते यातायात नियमों का पालन, इसलिए हर साल...

07 - नौकहाई शौर्य स्मारक के कार्य समय-सीमा में करें पूर्ण: उप मुख्यमंत्री

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 10 अंक 91, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2
(डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

पहली बात

मनमोहन सिंह : सियासी-कलयुग में विनम्र ईमानदारी की सत्य-कथा

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

पांच सौ साल पहले काशी की गलियों में रहने वाले विनम्र बुनकर और रहस्यवादी कवि कबीर ने ''ज्यों की त्यौं धर दीनी चदरिया'' नामक एक गंभीर कविता लिखी थी...उस कविता में देश के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की जिंदगी की अनुगूंज स्पष्ट सुनाई देती महूसस होती है। उनकी जिंदगी के सफरनामे की इबारत इस बात की ताकीद है कि सियासत के काजल की कोठरी में मनमोहन सिंह की चादर लेशमात्र भी मैली नहीं हुई...गरूर से कह सकते हैं कि उनकी जिंदगी कबीर की दार्शनिक कविता ''ज्यौं की त्यों धर दीनी चदरिया...'' की भाव-भूमि पर खरी उतरती है। सत्ता के गलियारों में गूंज रही पूर्व प्रधानमंत्री की विनम्रता की कहानियां मनमोहन सिंह की सफेद चदरिया की तस्दीक करती हैं।

सियासत के काले काजल की कोठरी में समूची जिंदगी गुजार देने के बाद उजली चदरिया के साथ बाहर निकल आना असाधारण है। मनमोहन सिंह ने वह करिश्मा कर दिखाया है। भारत की ताजा हिस्ट्री के पन्नों में मनमोहनसिंह जैसे उदाहरण बिरले ही देखने-सुनने को मिलेंगे। ज्यादा गौर करें तो फलक पर 'जय जवान- जय किसान' के प्रणेता व राजनीति में 'वामन-अवतार' धारण करने वाले पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की छबि ही जहन में उभरती है, जिन्होंने अपने छोटे से काल-खंड में लोकप्रियता का ब्रम्हांड नाप लिया था। अन्यथा इस सूची की तलाश में भटकन के अलावा कुछ भी हासिल नहीं होता है।

अवसान के बाद पिछले तीन दिनों में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की मेधावी प्रतिभा और राजनीतिक अवदान को लेकर सारे तथ्य सामने आ चुके हैं। राष्ट्र के गरीब नवाज आर्थिक-निर्माता के रूप में मनमोहन सिंह की छबि के तथ्यपरक महिमा-मंडन के बाद उनके सियासी सफर और जिंदगी के विश्लेषण में नया कुछ कहने को बचा नहीं है। उनकी शालीनता और विनम्रता के किस्से लोक कथाओं की तरह सत्ता के गलियारों में सुने-सुनाए जाते रहे हैं। लेकिन उनके अवदान की स्व-स्फूर्त विस्तारित चर्चाओं के बाद एक पहलू पर गौर करना लाजमी है कि समाज मे लोगों की गुणवत्ता को देखने-समझने की क्षमता पूरी तरह पंगु नहीं हुई है। 9 अक्टूबर 2024 को रतन टाटा के देहावसान के वक्त भी अवाम की प्रतिक्रिया ऐसी ही थी।

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के अवसान के बाद आम लोग जिस तरह गमजदा नजर आए, उसने दो माह पहले दुनिया से प्रयाण करने वाले प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा की यादों को भी ताजा कर दिया। अपने वामप्रस्थ के उत्तरार्द्ध में दुनियादारी के सभी पहलुओं से दूर दोनो हस्तियों की मौत के बाद उठे मर्सिया के मातमी सुर इस बात की झलक हैं कि अवाम के दिल में इन दोनों की हस्ती, हैसियत और इज्जत का इंडेक्स कितना ऊंचा है?

समाज में दोनों महान आत्माओं के लिए स्व-स्फूर्त श्रद्धा और सम्मान आश्वस्त करता है कि देश के अवाम में खरे-खोटे की समझ अभी पूरी तरह खोटी नहीं हुई है। उद्योगपति रतन टाटा की मौत के बाद भी देश के माहौल में ऐसा ही सदमा घुला महसूस हुआ था, जो पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के इंतकाल के बाद फिलवक्त नजर आ रहा है। दोनों महान आत्माओं के प्रति यह सम्मान और संवेदना इसलिए महती है कि मीडिया का एक-एक पल बिका हुआ है। ये दोनों हस्तियां प्रचार-प्रसार के उन हथकंडों से कोसों दूर थीं, जो जीरो से हीरो बनने के लिए अपनाए जाते रहे हैं।

सार्वजनिक जीवन में नेताओं और अभिनेताओं की लोकप्रियता और प्रभावशीलता के प्रायोजित आंकड़ों के बीच मनमोहन सिंह और रतन टाटा के प्रति सम्मान और श्रद्धा का यह निस्वार्थ स्व-स्फूर्त उच्चांक दर्शाता है कि समाज में कद्रदानों की नजर कितनी पैनी और पारंगत है? राजनीतिक और सामाजिक संरचना के नजरिए से मनमोहन सिंह और रतन टाटा की विदाई के घटनाक्रमों के बाद अवाम की गमजदा मूरत पर गौर करना जरूरी है। राजनीति, प्रशासन और मीडिया के लोगों ने जिस सम्मानजक तरीके से पूर्व लगभग गुमनाम पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, और उसके पहले रतन टाटा की अंतिम विदाई के क्षणों को संजोया और पिरोया है, वह अभूतपूर्व भले नहीं हो, लेकिन अप्रत्याशित जरूर है।

फिलवक्त सिर्फ मनमोहन सिंह की बात करें तो उनके सम्मान की विरूदावली का जयगान करने वाले ज्यादातर वही लोग थे, जो पिछले कई वर्षो सें उनकी रीति-नीति और राजनीतिक चाल-चलन को घोर आलोचक थे। अपने प्रधानमंत्रित्व काल के दस सालों में मीडिया के लिए सहज उपलब्ध मनमोहन सिंह के प्रति मीडिया कभी भी उदार नहीं रहा। उनके राजनीतिक विरोधियों ने भी भ्रष्टाचार के 'नोशनल' आरोपों ने उन्हें बुरी तरह से आहत किया था। लेकिन वो पूरे समय राजनीतिक विद्वेषों से परे देश की आर्थिक संरचनाओं को ताकतवर बनाने का काम करते रहे, जिसके प्रतिफल आज सामने आ रहे हैं। लेकिन तत्कालीन राजनीतिक समीक्षकों और विरोधियों ने उनके कार्यों की समालोचना नहीं, बल्कि आलोचना ही की, जो उन्हें आहत करती थी। शायद इसीलिए प्रधानमंत्री के रूप मे अपनी अंतिम पत्रकार-वार्ता में मनमोहन सिंह ने कहा था कि आज लोग भले ही कुछ भी कहें, लेकिन इतिहास उनके प्रति हमेशा दयालु रहेगा। हमेशा से सभी किस्म के आरोपों का जवाब खामोशी से देने वाले मनमोहन सिंह का यह मर्मांतक कथन लोगों को हमेशा याद रहेगा।

दिलचस्प यह है कि उनकी मौत के साथ ही उनके साथ न्याय की ऐतिहासिक प्रक्रिया शुरू भी हो गई है। समीक्षक मान रहे हैं कि वो प्रधानमंत्री के औदात्य के वो पैमाने सेट कर गए हैं, जो भविष्य में हर प्रधानमंत्री के लिए कसौटियों का काम करेंगे। सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर मनमोहन जैसी सादगी, सहजता, शालीनता, विनम्रता, दयालुता और संवेदनशीलता जैसे मानवीय गुणों का पैकेज मिलना आसान नहीं है। यह भी गौरतलब है कि देश के आर्थिक उन्नयन में उनके महती योगदान के अलावा प्रधानमंत्री के रूप में उनकी शैक्षणिक योग्यता, दक्षता और विशेषज्ञता भी हमेशा अपवाद ही रहेगी। देश के आर्थिक निर्मताओं की गिनती में उनकी महत्ता हमेशा निर्विवाद रहेगी।

जो व्यक्ति जिंदगी भर 'एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर' से लेकर 'मौन मनमोहन सिंह' के घेरे में आलोचनाओं से बंधा रहा हो, उसके महाप्रयाण के बाद उनकी विभिन्न विशिष्टताओं और मेरिट की समीक्षात्मक टिप्पणियों में विरूदावली का सहज सैलाब चौंकाता है। यह विरोधाभास इस बात का परिचायक है कि समाज में चश्मों के रंग कितने बदरंग हैं? ऐसे रंगों से बचना जरूरी है। राजनीति की बारहखड़ी को बेमतलब कठिन, कर्कश और दुरूह बनाना मुनासिब नहीं है। ऐसे प्रयास देश के वर्तमान को कसैला और भविष्य को कर्कशता की ओर ढकेलते हैं। बहरहाल, मनमोहन सिंह का राजनीतिक-जीवन सत्य-कथाओं के प्रेरक वृत्तांत के रूप में सामने आता है, जो भविष्य में उम्मीदों को मजबूती देते हैं।

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

क्या तुझ पर भी बेचैनी सी तारी है
मुझ पर तो ये हिज्र बहुत ही भारी है
सच सुनने में किस को अच्छा लगता है
सच कहने में ये भी इक दुश्वारी है
बे-अदबी की बात अदब से करते हैं
कम-ज़र्फ़ों में किस हद तक मक्कारी है
जिस शोहरत पर तुम इतना इतराते हो
मैंने उसको हरदम ठोकर मारी है
तेरा ग़म है जो लिखवाता रहता है
वरना मुझमें कब इतनी फ़नकारी है।

- डॉ.पूनम यादव

बर्फबारी, ओलावृष्टि और बारिश से ठिठुर रहा है देश

हिमाचल में भीषण बर्फीला तूफान, अटल टनल हुई बंद

- श्रीनगर एयरपोर्ट पर फ्लाइट्स हुई रद्द, ट्रेनें भी बाधित
- राजधानी भोपाल में बारिश का 5 साल का रिकॉर्ड टूटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बर्फबारी, ओलावृष्टि और बारिश से पूरा देश ठिठुर गया है। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों पर साल का सबसे भारी हिमपात हुआ। जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में 8 इंच, गांदरबल में 7 इंच, सोनमर्ग में 8 इंच बर्फ गिरी। वहीं, पहलगाम में 18 इंच बर्फ गिरी। श्रीनगर-जम्मू हाईवे भी बंद हो गया है। यहां करीब 1200 से ज्यादा गाड़ियां फंसी हुई हैं। खराब मौसम के कारण रविवार को लगातार दूसरे दिन श्रीनगर एयरपोर्ट बंद है। रेलवे यातायात भी बाधित हुआ है। उधर, हिमाचल प्रदेश में शनिवार रात बर्फीला तूफान चला। 24 घंटे में रोहतांग के नॉर्थ और साउथ पोल पर 3 फीट से ज्यादा बर्फ जम चुकी है। अटल टनल पर आवाजाही बंद कर दी गई है। दूसरी ओर, राजस्थान-मध्य प्रदेश समेत कई राज्यों में बारिश हुई। दिल्ली में शनिवार सुबह तक एक दिन में 41.2 मिमी बारिश हुई। यह दिसंबर में 101 साल में एक दिन में होने वाली सर्वाधिक बारिश है। मध्य प्रदेश के भी कई जिलों में तेज बारिश और ओले गिरे। भोपाल में शनिवार को हुई 17 एमएम (पौन इंच) बारिश ने नया रिकॉर्ड बनाया।

यह 5 साल बाद दिसंबर में एक दिन में हुई सबसे ज्यादा बारिश है। जम्मू-कश्मीर में 40 दिन के चिल्लई-कलां का दौरा जारी है, जिसमें भयंकर ठंड और बर्फबारी होती है। पिछले घंटे में 24 पुलवामा, अनंतनाग, शोपियां और कुलगांव में 2-2 फीट के करीब बर्फबारी हुई है। भारी बर्फबारी के कारण श्रीनगर-लेह मार्ग भी बंद है। 8.5 किमी लंबी नवयुग सुरंग में जमी बर्फ हटाई जा रही है।

यहां फंसे लोगों ने सुरंग में क्रिकेट खेल कर समय काटा। लोगों को कार में ही रात बितानी पड़ी। हिमाचल में बीते 24 घंटे से बर्फबारी और बारिश दोनों ही जारी हैं। कई इलाकों में लैंडस्लाइड भी हुआ। धर्मशाला सहित दूसरे पहाड़ी इलाकों में अन्य ऊपरी इलाकों में टेम्परेचर 0 से 1 डिग्री के बीच रहा। उत्तराखंड के पहाड़ों में लगातार बर्फबारी और बारिश के कारण बद्रीनाथ नेशनल हाईवे भी बंद कर दिया गया है। चीन बॉर्डर को जोड़ने वाला जोशीमठ-नीति नेशनल हाईवे भी सुराईथोथा से आगे बंद है।

लैंडिंग के दौरान नहीं खुल पाए पहिए, हो गया ब्लास्ट

साउथ कोरिया में प्लेन क्रैश,179 लोगों की मौत

- एयरपोर्ट बाउंड्री से टकराया, उड़े परखच्चे

सियोल (एजेंसी)। साउथ कोरिया में मुआन एयरपोर्ट पर जेजू एयर का विमान क्रैश हो गया। न्यूज एजेंसी के मुताबिक विमान में 175 पैसेंजर और 6 क्रू मेंबर समेत 181 लोग थे। 179 शव बरामद किए जा चुके हैं। रेस्क्यू टीम ने 2 लोगों को जिंदा बचा लिया गया। बाकी 3 यात्रियों के मारे जाने की आशंका जताई गई है। मरने वालों में 82 पुरुष और 83 महिलाएं हैं। 11 शवों की अब तक पहचान नहीं हो पाई है। हादसा भारतीय समय के मुताबिक रविवार सुबह 5.37 बजे (लोकल टाइम सुबह 9.07 बजे) हुआ। बैंकॉक से आ रहा प्लेन एयरपोर्ट पर लैंड करने वाला था, लेकिन लैंडिग गियर में खराबी की वजह से विमान के पहिए नहीं खुले। इमरजेंसी में विमान की बेली लैंडिंग कराई गई। इसमें प्लेन की बॉडी सीधे रनवे से टकराती है। इस दौरान विमान रनवे पर फिसलता हुआ एयरपोर्ट की बाउंड्रीवाल से जा टकराया। उसमें धमाके के साथ आग लग गई। इधर रॉयटर्स ने खबर दी है कि हादसे के पहले मुआन एयरपोर्ट के एयर ट्रैफिक कंट्रोलर से प्लेन से पक्षी टकराने का अलर्ट भेजा गया था। प्लेन के लैंडिंग गियर में खराबी की एक वजह यह भी हो सकती है। दो बार लैंडिंग की कोशिश की, दूसरी बार में हादसा जेजू एयरलाइन का जो प्लेन क्रैश हुआ है, वह अमेरिकी कंपनी बोइंग का 737-800 प्लेन था। प्लेन ने एयरपोर्ट पर लैंडिंग के लिए दो बार कोशिश की। पहली बार में लैंडिग गियर नहीं खुलने की वजह से प्लेन लैंड नहीं हो पाया था। इसके बाद प्लेन ने एयरपोर्ट का एक चक्कर लगाया था। पायलट ने दूसरी बार प्लेन को बिना लैंडिग गियर के ही बैली लैंडिंग (बॉडी के बल) कराने का फैसला किया। कई मीडिया रिपोर्ट्स में मुताबिक पक्षी के टकराने का दावा हो रहा है।

ओडिशा में 40 तीर्थयात्रियों से भरी बस पलटी, 4 की मौत

भुवनेश्वर। ओडिशा के कोरापुट जिला स्थित प्रसिद्ध शैवपीठ गुप्तेश्वर के पास सुकनाल घाटी में तीर्थयात्रियों से भरी एक बस के पलट जाने से चार लोगों की मौत हो गई, जबकि 28 लोग घायल हो गए। घटना रविवार की सुबह साढ़े पांच बजे की है।

देश का संविधान है इसलिए मैं बात कर पा रहा हूं

पीएम मोदी ने की साल 2024 की आखिरी मन की बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 117वीं कड़ी और इस साल के अंतिम 'मन की बात' में रविवार को लोगों से आह्वान किया कि वे संविधान के बारे में जानें और उत्साह से उससे जुड़ें। उन्होंने कहा, 2025 अब दरवाजे पर दस्तक दे रहा है, और इस नए साल में हम एक ऐतिहासिक पल के गवाह बनने जा रहे हैं। 26 जनवरी 2025 को हमारे संविधान को लागू हुए 75 वर्ष पूरे हो जाएंगे। यह हमारे लिए गर्व और उत्साह का अवसर है। प्रधानमंत्री ने कहा कि संविधान, जो हमारे देश के लोकतंत्र की नींव है, समय की हर कसौटी पर खरा उतरा है। हमारे संविधान निर्माताओं ने हमें ऐसा दस्तावेज दिया, जो हर भारतीय का मार्गदर्शक बना हुआ है। यह संविधान ही है जिसने हमें समानता, स्वतंत्रता और न्याय का अधिकार दिया। यह भारत का संविधान ही है, जिसकी वजह से मैं आज यहां हूं और आपसे बात कर पा रहा हूं। इस साल 26 नवंबर को संविधान दिवस के अवसर पर एक साल तक चलने वाली गतिविधियों की शुरुआत की गई है। देश के नागरिकों को संविधान की विरासत से जोड़ने के लिए एक खास वेबसाइट संविधान 75.कॉम बनाई गई है। इस वेबसाइट पर आप संविधान की प्रस्तावना पढ़ सकते हैं, अपना वीडियो अपलोड कर सकते हैं, और अलग-अलग भाषाओं में संविधान के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं। मेरा विशेष आग्रह है कि स्कूल और कॉलेज के छात्र-छात्राएं इस वेबसाइट पर जरूर जाएं और इसका हिस्सा बनें।

प्रधानमंत्री 24 फरवरी को करेंगे जीआईएस-2025 का शुभारंभ : मुख्यमंत्री

व्यवस्थाओं में कोई कमी नहीं रहे, समय रहते करें सभी तैयारियां

- मुख्यमंत्री ने जीआईएस-2025 की तैयारियों के संबंध में ली बैठक

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस) एक वैश्विक समागम है। व्यवस्थाओं में कोई भी कमी न रहे। दो महीने से भी कम समय शेष है, समय रहते सभी प्रकार की तैयारियां पुख्ता तरीके से कर ली जाएं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 24 फरवरी को जीआईएस 2025 का विधिवत् शुभारंभ करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को मुख्यमंत्री निवास में जीआईएस-2025 की तैयारियों की बैठक ले रहे थे। उन्होंने कहा कि जीआईएस में कोर सेक्टर्स पर फोकस करते हुए ऐसी गतिविधियां आयोजित करें, जिससे ठोस परिणाम मिलें। जीआईएस-2025 में देश-विदेश से आने वाले सभी मेहमानों के रहने-खाने एवं आसपास के पर्यटन स्थलों पर आने-जाने एवं भ्रमण की समुचित व्यवस्था की जाए। मेहमानों को होम-स्टे के बारे में भी बताया जाए। इस कार्य के लिए संस्कृति, वन, पर्यटन एवं स्थानीय प्रशासन आपसी समन्वय के साथ भोपाल शहर के सौंदर्यीकरण के कायों के लिए भी अभी से युद्ध स्तर पर तैयारियों शुरू कर दें।

बैठक में मुख्यमंत्री कार्यालय के अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, औद्योगिक नीति एवं प्रोत्साहन विभाग के प्रमुख सचिव श्री राघवेंद्र कुमार सिंह, एमडी एमपीआईडीसी श्री चंद्रमौली शुक्ला, कमिश्नर भोपाल श्री संजीव सिंह, एमडी पर्यटन विकास निगम श्री इलैया राजा टी., कलेक्टर भोपाल श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह, संचालक जनसम्पर्क श्री अंशुल गुप्ता तथा उद्योग विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय परिसर में होगी जीआईएस

प्रमुख सचिव औद्योगिक नीति एवं प्रोत्साहन श्री राघवेंद्र कुमार सिंह ने जीआईएस-2025 की अब तक की तैयारियों एवं भावी रूप रेखाओं के बारे में पीपीटी प्रदर्शन के जरिए विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रदेश का 8वां ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस-2025) भोपाल के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय परिसर में आयोजित की जाएगी। इसमें 20 हजार से अधिक प्रतिभागियों के शामिल होंने का अनुमान है। इसलिए इसी आधार पर तैयारियां की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि दो दिवसीय वैश्विक निवेशक सम्मेलन में राज्य के औद्योगिक ईको-सिस्टम एवं प्रदेश में उपलब्ध निवेश संभावनाओं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समग्रता के साथ प्रस्तुत करने के प्रयास किए जाएंगे। इसमें 25 देशों के लगभग एक हजार प्रतिभागी शामिल होंगे।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 18 °c

न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ सोमवार, 30 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

हर राज्य, शहर और स्टेशन को कवर करेगा रेलवे

प्रयागराज (एजेंसी)। महाकुंभ के लिए रेलवे ने खास तैयारियों की हैं। एप, टोल फ्री नंबर, गाइड के साथ ही ट्रेनों से यात्रा का अहम शेड्यूल बनाया है। उत्तर मध्य रेलवे 13 हजार से अधिक ट्रेनों का संचालन करेगा। 3000 से अधिक विशेष गाड़ियां चलाई

- **जारी कर रहा ट्रेनों का शेड्यूल, श्रद्धालुओं की वापसी के लिए भी इंतजाम**

जाएंगी। विशेष ट्रेनों में 2000 आउटवर्ड गाड़ियां होंगी। ये ट्रेनें दूसरे राज्यों के स्टेशनों से आएंगी और यात्रियों को लेते हुए वापस वहीं जाएंगी। रेलवे सभी राज्यों के छोटे से छोटे स्टेशनों को कवर करने की तैयारी करे हैं। जबकि 800 इनवर्ड गाड़ियां (वापसी की यात्रा के लिए) होंगी। ये ट्रेनें उत्तर मध्य रेलवे के स्टेशनों से संचालित होंगी जो वापसी में श्रद्धालुओं को लेकर रवाना हो जाएंगी। महाकुंभ

के दौरान तीर्थयात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए रिंग रेल मेमू सेवा शुरू की जाएगी। यह सेवा अयोध्या, काशी और चित्रकूट जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों की यात्रा को सहज और सुगम बनाएगी। तीर्थयात्रियों को इस सेवा के माध्यम से बिना किसी परेशानी के सीधी यात्रा का अनुभव मिलेगा। महाकुंभ 2013 में भारतीय रेलवे ने कुल 1122 विशेष गाड़ियों का संचालन किया था, जबकि महाकुंभ 2025 के लिए विशेष गाड़ियों की संख्या में वृद्धि की गई है, जिससे यात्रियों को और बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। महाकुंभ के दौरान भीड़भाड़ को नियंत्रित करने और यात्रियों की यात्रा को आसान बनाने के लिए, 23 जोड़ी (कुल 46 ट्रेनों) को प्रयागराज और नैनी जंक्शन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा। यह पहल तीर्थयात्रियों की यात्रा को सुविधाजनक और आरामदायक बनाएगी। महाकुंभ-2025 के लिए उत्तर मध्य रेलवे ने यात्रियों की सुविधा के लिए एक विशेष टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर 1800 4199 139 शुरू किया है। यह हेल्पलाइन महाकुम्भ के दौरान रेल संबंधित सभी जानकारी और समस्याओं के समाधान के लिए उपलब्ध होगी। श्रद्धालु किसी भी समय यात्रा की योजना, ट्रेनों की उपलब्धता, प्लेटफॉर्म की जानकारी, या किसी अन्य समस्या के समाधान के लिए इस नंबर पर संपर्क कर सकते हैं।

संक्षिप्त समाचार

केजरीवाल का आरोप, दिल्ली में भाजपा का ऑपरेशन कमल शुरू

- **कहा-फर्जी वोटिंग से जीतने का है प्लान, संजय सिंह का दावा-पत्नी का भी नाम कटवाया जा रहा**

नई दिल्ली (एजेंसी)। एएपी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने रविवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस करके कहा- दिल्ली में भाजपा ने ऑपरेशन कमल शुरू कर दिया है। वे इस बार फर्जी वोटिंग के सहारे जीतने का प्लान

बना रहे हैं। पिछले 15 दिनों में नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र में अचानक से 10 हजार वोटर्स बढ़ गए। हमने चुनाव आयोग से इसकी शिकायत भी की है। हालांकि इलेक्शन कमीशन को दी शिकायत में केजरीवाल ने 25 दिसंबर तक बढ़े वोटर्स की संख्या 7500 बताई है। केजरीवाल नई दिल्ली विधानसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। उनके खिलाफ कांग्रेस ने संदीप दीक्षित को उम्मीदवार बनाया है।

बंगाल में बिक रही बांग्लादेशी सिम, इन्हें ट्रैक करना मुश्किल

- **इंटरनेशनल की जगह लोकल कॉल पर बातचीत, सीमा में पांच किमी अंदर तक ये सिम ऐक्टिव**

कोलकाता (एजेंसी)। बांग्लादेश से सटे बंगाल बॉर्डर पर यही सिम सीमा सुरक्षा बल का सिरदर्द बनी हुई हैं। अगस्त में बांग्लादेश

में तख्तापलट के बाद से श्रीरामपुर में बाहरी सिम की खरीद-बिक्री होने लगी है। बांग्लादेश के ज्यादातर टेलीकॉम सर्विस प्रोवाइडर्स के नेटवर्क भारतीय सीमा में पांच किमी भीतर तक आते हैं। यानी तस्कर दो देशों के बीच लोकल कॉल पर बात कर रहे हैं।

बिहार के 300 से ज्यादा शिक्षक विजिलेंस के राडार पर

- **भोजपुर के दो शिक्षकों पर निगरानी ने कराई एफआईआर**

आरा (एजेंसी)। बिहार में दो शिक्षकों पर फर्जी प्रमाण पत्रों के साथ नौकरी करने के आरोप में एफ आई आर दर्ज हुई है। निगरानी ने यह कार्रवाई की है। ये शिक्षक तरारी प्रखंड की

कुमारी सुनीता और जगदीशपुर प्रखंड के संजय चौधरी हैं। सुनीता पर मैट्रिक और संजय पर बिहार विद्यालय परीक्षा समिति का फर्जी प्रमाण पत्र लगाने का आरोप है। निगरानी का कहना है कि इस मामले में और भी लोग शामिल हो सकते हैं।

जिंदगी की जंग हार गया सुमित

16 घंटे चले रेस्क्यू के बाद गुना में बोरवेल से निकाला, हाथ-पैर फूल गए थे, मुंह में मिट्टी मिली

गुना (नप्र)। मध्य प्रदेश के गुना जिले की राघौगढ़ तहसील के पिपलिया गांव में शनिवार शाम 9 साल का बच्चा सुमित खेत में बने बोरवेल में गिर गया था। भोपाल से पहुंची एनडीआरएफ की टीम ने रातभर रेस्क्यू अभियान चलाकर रविवार सुबह करीब 10 बजे उसे बाहर निकाला।

बच्चे को गुना जिला अस्पताल के आईसीयू में ले जाया गया है। जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद वहां मौजूद सभी लोगों की आंखें नम हो गई। बच्चे के माता-पिता का रो-रोकर बुरा हाल है।

पानी में फूल गए थे हाथ-पैर

डॉक्टरों के मुताबिक पानी में होने की वजह से उसके हाथ और पैर फूले हुए हैं। उसके मुंह में मिट्टी भी मिली है। अस्पताल में लेकर यह जांच की गई कि कहीं हाइपोथर्मिया की वजह से उसके अंगों में शिथिलता तो नहीं हो गई। लेकिन जांच में यह साफ हो गया कि बच्चे की मौत हो गई है।

रातभर 45 फीट खुदाई के बाद एनडीआरएफ की टीम ने 10 फीट टनल बनाने के बाद बच्चे तक पहुंची। बच्चा 39 फीट पर फंसा था और गड्ढे में पानी भी था। विधायक और कलेक्टर सहित कई अधिकारी रातभर मौके पर ही रहे। बच्चे में अभी कोई हलचल नहीं देखी जा रही है।

खेलते समय गिरा बच्चा

शनिवार शाम करीब 6.30 बजे दशरथ मीना का नौ वर्षीय पुत्र सुमित खेलते हुए गांव के फूलसिंह मीना के खेत में पहुंच गया, वहां बोरवेल का गड्ढा खुला हुआ था। बच्चा उस बोरवेल में गिर गया। काफी देर तक बालक नहीं दिखा तो स्वजनों ने तलाशी शुरू की और गड्ढे मे उसके गिरने की जानकारी हुई।

100 फीट गहरा बोरवेल

रेस्क्यू ऑपरेशन के लिए दो जेसीबी, स्वास्थ्य, पुलिस, एमपीईबी और जनरेटर सहित सभी आवश्यक संसाधन जुटाए गए थे। कलेक्टर डॉक्टर सत्येंद्र सिंह भी मौके पर पहुंच गए थे। गुना के कलेक्टर डॉ. सतेंद्र सिंह ने बताया कि रेस्क्यू के माध्यम से सबसे पहले गड्ढे में बच्चे को ऑक्सीजन पहुंचाई जा रही थी। बोरवेल एक साल पहले ही कराया गया था। यह 100 फीट गहरा बताया गया। कलेक्टर डॉ. सत्येंद्र सिंह ने बताया कि फूलसिंह के खेत में बने बोरवेल में बच्चा गिरा था। प्रशासन और स्थानीय टीम बच्चा बचाने के लिए सभी उपायों का उपयोग कर रही थी। राघौगढ़ विधायक जयवर्धन सिंह भी मौके पर पहुंचे। उन्होंने कलेक्टर से घटना की जानकारी भी ली।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बोरवेल में गिरने से हुई बालक की मृत्यु पर दु:ख व्यक्त किया

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुना जिले में ग्राम पीपल्या में निजी जमीन पर बोरवेल में गिरने से बालक की मृत्यु पर दुख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जिला प्रशासन सहित एसडीईआरएफ बचाव दल के लगातार और अथक प्रयासों के बावजूद बालक को सुरक्षित बाहर नहीं निकाला जा सका। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार इस कठिन घड़ी में शोकाकुल परिवार के साथ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ईश्वर से दिवंगत बालक की आत्मा की शांति और परिजन को यह गहन दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए नागरिकों से अपनी निजी जमीन पर बोरवेल को उचित रूप से कवर करने की अपील की।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा-

महू के रक्षा संस्थान ऑफिसर और जवानों को युद्ध कौशल में बना रहे पारंगत

महू (नप्र)। 'हमारा लक्ष्य है कि 2047 तक भारत को विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाया जाए। इस लक्ष्य की प्राप्ति में सेना की भूमिका अहम है। आप केवल सीमाओं के रक्षक ही नहीं हैं, बल्कि राष्ट्र के निर्माण के अग्रदूत भी हैं।'

यह बात रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कही। वे दो दिवसीय दौरे पर रविवार को इंदौर जिले के महू कैंट एरिया आए हैं। उनके साथ आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी पहुंचे हैं। दोपहर करीब 12.10 बजे सेना की हैलिकॉप्टर से आर्मी वॉर कॉलेज के हैलीपेड पहुंचे। दो दिन तक रक्षामंत्री महू में ही रहेंगे। इस दौरान आर्मी की सभी यूनिट्स का दौरा करेंगे।रक्षा मंत्री आर्मी वॉर कॉलेज में स्थित आयोजन में पहुंचे। यहां जवानों और अधिकारियों को संबोधित किया।

सेना का आभार प्रकट करता हूं - कार्यक्रम के दौरान रक्षामंत्री ने कहा, ' महू में एक लंबे समय से आर्मी वॉर कॉलेज, इन्फेंटरी स्कूल और मिलिट्री कॉलेज ऑफ टेलिकम्युनिकेशन इंजीनियरिंग

भी सेवाएं दे रहे हैं। स्थापना के समय से ही ये संस्थान भारतीय सेनाओं के ऑफिसर्स और जवानों को मिलिट्री स्ट्रेटजीस और युद्ध कौशल में पारंगत बना रहे हैं।

मैं राष्ट्र के प्रति आप सभी की सेवा के लिए भी आभार प्रकट करता हूं। आपका समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा प्रेरणा का काम करती है। हमारा लक्ष्य है कि 2047 तक भारत को एक विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाया जाए। इस लक्ष्य की प्राप्ति में, सेना की भूमिका बेहद अहम है। आप केवल सीमाओं के रक्षक ही नहीं हैं, बल्कि आप इस राष्ट्र के निर्माण के अग्रदूत भी हैं।आपके कंधों पर बड़ी जिम्मेदारी है। आपको एक तरफ तो, हमारी सीमाओं का भार संभालना है। दूसरी तरफ, विकसित भारत के निर्माण की नींव भी रखनी है।

हमें खुद को हमेशा अलर्ट रहने की आवश्यकता है। आपका अनुशासन साधना से कम नहीं। देश की उत्तरी और पश्चिमी सीमा पर लगातार चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हमारे दुश्मन बाहरी हों या आंतरिक, हमें उनकी गतिविधियों पर पैनी नजर रखनी होगी।

जनजातीय गौरव भीमा नायक ने भीलों के स्वतंत्रता प्रिय स्वाभिमान को बनाए रखा : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने स्वतंत्रता सेनानी भीमा नायक के 148वें बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जनजातीय गौरव और स्वतंत्रता सेनानी, भीमा नायक के बलिदान दिवस पर सादर श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज के अधिकारों और अस्मिता के रक्षार्थ उनका संघर्ष हमें देश भक्ति की प्रेरणा प्रदान करता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के गौरव भीमा नायक के 148वें बलिदान दिवस पर, बड़वानी जिले के ग्राम धाबा बावड़ी में हुई श्रंद्धाजलि सभा कार्यक्रम के लिए जारी संदेश में कहा कि भीमा नायक प्रदेश के गौरवशाली इतिहास का अभिन्न अंग हैं। आजादी की लड़ाई में भीमा नायक ने जनजातियों को अंग्रेजों के विरुद्ध संगठित किया। सुरसी बाई भील, भीमा नायक की माता जी थी, उन्होंने ही भीमा नायक और जनजातीय समाज को अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुट करने की प्रेरणा दी। शहीद भीमा नायक का कार्य क्षेत्र

बड़वानी रियासत से महाराष्ट्र के खानदेश तक फैला था। तात्या टोपे के निमाड़ आगमन पर भीमा नायक ने उनसे मुलाकात की थी। अंबापानी युद्ध में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। भीमा नायक ने भीलों के स्वतंत्रता प्रिय स्वाभिमान को बनाए रखा, उन्होंने अंतिम क्षणों तक कोई समझौता या समर्पण नहीं किया। सलोदा नामक स्थान पर अंग्रेजों से युद्ध के दौरान धोखे से उन्हें बंदी बनाया गया। मंडलेश्वर किले में बंदी रखने के बाद उन्हें कालापानी कैद में डाल दिया गया। लम्बी प्रताड़ना सहने के बाद वे जेल में ही वीरगति को प्राप्त हुए।

जनजातीय वर्ग के समग्र विकास और कल्याण के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनजातीय वर्ग के समग्र विकास और कल्याण के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। शासन द्वारा जनजातीय विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति, आवास सहायता, विदेश में अध्ययन के लिए सहायता, परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जा रहा है। जनजातीय समुदाय के लिए आवास, सड़कों के विस्तार, समग्र शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता, सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसी क्रम में हाल ही में जनजातीय क्षेत्रों में विभिन्न विभागों की चिन्हित योजनाओं में शत-प्रतिशत सैचुरेशन के लिए कैबिनेट द्वारा 'धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान' आरंभ करने को सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान की गई है।

मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार की व्यवस्थाओं से कांग्रेस नाराज

- **लगाए आरोप, परिवार के लिए सिर्फ 3 कुर्सियां रखीं, गन सैल्यूट के दौरान पीएम बैठे रहे**

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के स्मारक विवाद के बाद कांग्रेस ने अब उनके उनके अंतिम संस्कार की व्यवस्था को लेकर निशाना साधा है।

कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह के राजकीय अंतिम संस्कार में सरकार की तरफ से अव्यवस्था और अनादर देखकर हैरानी हुई। खेड़ा ने नौ पॉइंट में अंतिम संस्कार से जुड़ी आपत्तियां दर्ज कराई।

अमेरिका ने किया तो रूस भी करेगा परमाणु परीक्षण

दुनिया में मंडराया तीसरे विश्व युद्ध का खतरा, नई धमकी!

मॉस्को (एजेंसी)। रूस के उप विदेश मंत्री सर्गेई रयाबकोव ने अमेरिका को चेतावनी दी है कि अगर डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन परमाणु परीक्षण की तरफ जाता है,

- **रयाबकोव ने अमेरिकी नीतियों को बताया बेहद शत्रुतापूर्ण**

तो वह भी इस पर आगे बढ़ेंगे। रयाबकोव ने रूसी अखबार 'कोमर्सेंट' को दिए एक इंटरव्यू में उन रिपोर्ट के जवाब में ये कहा है, जो कहती हैं कि डोनाल्ड ट्रंप के दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद अमेरिका

परमाणु परीक्षण शुरू करेगा। रूसी नेता ने कहा कि अमेरिका ऐसा करेगा तो फिर हमारे भी सभी विकल्प खुले हैं। यूक्रेन युद्ध के चलते रूस और अमेरिका के बीच तनाव शीत युद्ध के बाद सबसे उच्चतम स्तर पर है। इस स्थिति में परमाणु परीक्षण तनाव को और बढ़ा सकता है। दो महाशक्तियों में ये तनाव दुनिया को एक और विश्व युद्ध की तरफ भी धकेल सकता है। एक्सप्रेस डॉट यूके की रिपोर्ट के मुताबिक, परमाणु परीक्षणों की संभावना पर रयाबकोव ने कहा कि मैं बस इतना कहना चाहूंगा कि अंतरराष्ट्रीय स्थिति वर्तमान में बेहद मुश्किल है। अमेरिकी नीतियां हमारे प्रति बेहद शत्रुतापूर्ण हैं। इसलिए सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हमारे पास जो भी विकल्प हैं और राजनीतिक संकेत भेजने के लिए हमें जो भी कदम उठाने हैं, उनमें से किसी भी संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। 1990 के दशक के बाद से रूस और अमेरिका ने कोई परमाणु परीक्षण किया है। रूस ने 1996 में व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि पर हस्ताक्षर किए थे। यह संधि नागरिक या सैन्य उद्देश्यों के लिए परमाणु विस्फोटों पर रोक लगाती है।

हालांकि यूक्रेन में युद्ध शुरू करने के बाद रूस इस समझौते से हट गया है। रूस अब उन आठ देशों की सूची में है, जो इस समझौते को मंजूरी नहीं देते हैं।

यूक्रेन युद्ध में घायल कई उत्तर कोरियाई सैनिकों की हुई मौत

जेलेंस्की ने कहा-रूस के लिए इनकी जान की कोई कीमत नहीं

मॉस्को (एजेंसी)। रूस और यूक्रेन के युद्ध में उत्तर कोरिया के कई सैनिक मारे गए हैं। यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने शुक्रवार को कहा कि यूक्रेन की सेना की ओर

से पकड़े जाने के बाद कई गंभीर रूप से घायल उत्तर कोरियाई सैनिक अपनी चोटों के कारण मारे गए। जेलेंस्की ने शुक्रवार को एक संबोधन में कहा कि हमारे सैनिक उन्हें बंदी बनाने में सफल रहे। लेकिन वे गंभीर रूप से घायल थे, जिस कारण वे बचाए नहीं जा सके। उन्होंने यह नहीं बताया कि कितने सैनिक पकड़े गए। माना जा रहा है कि ये सैनिक यूक्रेन की ओर से युद्धबंदी बनाए गए पहले उत्तर कोरियाई सैनिक हैं।

साइबर फ्रॉड और डिजिटल ठगी से बचने के उपाय

नुक्कड़ नाटकों से संदेश; इंदौर पुलिस ने जारी किए डीपी और पोस्टर

इंदौर (नप्र)। साइबर फ्रॉड और डिजिटल ठगी जैसी घटनाओं से लोगों को जागरूक करने के लिए इंदौर पुलिस सक्रिय हो गई है। विभिन्न स्थानों पर जाकर लोगों को इनसे बचाव के तरीके समझाए जा रहे हैं। नुक्कड़ नाटकों के जरिए बताया जा रहा है कि साइबर फ्रॉड और डिजिटल धोखाधड़ी से कैसे बचा जा सकता है। इसके साथ ही, इंदौर पुलिस ने जागरूकता बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया पर विशेष डीपी (डिस्प्ले पिक्चर) और पोस्टर जारी किए हैं। इन माध्यमों से नागरिकों को सतर्क रहने, धोखेबाजों से बचने और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी तुरंत पुलिस को देने की सलाह दी जा रही है। इंदौर में साइबर फ्रॉड और डिजिटल ठगी की कई घटनाएं सामने आ चुकी हैं, जिनमें लोग अपने करोड़ों रुपए गंवा चुके हैं। घटनाओं के बाद वे क्राइम ब्रांच और पुलिस में शिकायत दर्ज कराते हैं। इन घटनाओं पर अंकुश लगाने और नागरिकों को साइबर फ्रॉड व डिजिटल ठगी से बचाने के लिए इंदौर पुलिस ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। जागरूकता अभियान, सोशल मीडिया पोस्टर, और नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से लोगों को सतर्क किया जा रहा है, ताकि वे इन खतरों से बच सकें। अलग-अलग जगहों पर पुलिस

छप्पन दुकान पर नुक्कड़ नाटक से जागरूकता अभियान

एडी.डीसीपी क्राइम ब्रांच राजेश दंडोतिया और उनकी टीम ने साइबर फॉड और डिजिटल ठगी के बढ़ते मामलों को ध्यान में रखते हुए इंदौर के छप्पन दुकान पर 'स्क्रीन का साया' नामक नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया। नाटक के माध्यम से कलाकारों ने यह दिखाया कि किस तरह फर्जी एजेंसियों जैसे सीबीआई,ईडी क्राइम ब्रांच, सीआईडी आदि के नाम पर साइबर अपराधी आम लोगों को डराकर जाल में फंसाते हैं। कार्यक्रम के अंत में एडी.डीसीपी ने बताया कि पुलिस हमेशा अपराधियों को शारीरिक रूप से गिरफ्तार करती है, 'डिजिटल अरेस्ट' जैसी कोई प्रक्रिया नहीं होती। इस मौके पर टीम ने करीब 500 लोगों को साइबर जागरूकता के पंपलेट वितरित किए और विभिन्न साइबर अपराधों से बचने के उपाय समझाए। इससे पहले पलासिया चौराहे पर भी टीम ने रेड सिग्नल पर रुकने वाले लोगों को पंपलेट और स्टिकर्स वितरित कर साइबर फ्रॉड से सतर्क रहने के लिए प्रेरित किया। टीम ने लोगों से जागरूक रहकर साइबर अपराधों को रोकने में सहयोग देने की अपील की।

जनता और युवाओं को जागरूक कर रही है।

लोगों को जागरूक कर रहे एडी.डीसीपी: साइबर फॉड और डिजिटल ठगी से बचाव के उद्देश्य से एडी.डीसीपी क्राइम ब्रांच राजेश दंडोतिया खुद जनता के बीच जाकर जागरूकता फैला रहे हैं। वे विभिन्न समाजों, संगठनों, स्कूल-कॉलेज, बैंक, बीएसएफ, अस्पताल, वरिष्ठ नागरिक समूहों, कॉलोनियों और टाउनशिप में जाकर लोगों को साइबर अपराध और डिजिटल ठगी से बचने के उपाय बता रहे हैं। उन्होंने बताया कि, अब तक वे इंदौर में 230 से अधिक स्थानों पर जाकर लोगों को जागरूक कर चुके हैं और उन्हें इन घटनाओं से बचाव के तरीके समझा चुके हैं।

निरीक्षण पर निकले इंदौर नगर निगम आयुक्त

- शहर की विभिन्न सड़कों का देखा काम
- काम में तेजी लाने के दिए निर्देश

इंदौर (नप्र)। रविवार सुबह नगर निगम आयुक्त इंदौर में अलग-अलग जगह चल रहे सड़कों के कामों को देखने पहुंचे। उन्होंने वहां की वर्तमान स्थिति देखने के साथ ही अधिकारियों से चर्चा की और जरूरी निर्देश दिए। दरअसल, नगर निगम आयुक्त शिवम वर्मा शहर के जिंसी चौराहे से रामबाग चौराहे तक, एमआर 5 रोड, इंदौर वायर फैक्ट्री से छोटा बांगड़दा होते हुए सुपर कॉरिडोर सहित शहर के विभिन्न सड़कों के निर्माण काम के संबंध में निरीक्षण करने पहुंचे। निरीक्षण में उनके साथ अपर आयुक्त अभय राजनगांवकर, नरेश जायसवाल और अन्य निगम अधिकारी-कर्मचारी मौजूद थे। आयुक्त ने यहां के काम को देखने के साथ ही अधिकारियों को जरूरी निर्देश भी दिए।

इंदौर में सुबह से बादल, ठंड बढ़ी

तापमान में 2 डिग्री की गिरावट, जनवरी में सर्दी का असर रहेगा ज्यादा

इंदौर (नप्र)। इंदौर में रात मावठा और शनिवार को सर्दी के साथ कुछ स्थानों पर बारिश के बाद अब बारिश की गतिविधि कम हो गई है। इसके साथ ही पिछले 24 घंटों में दिन और रात के तापमान में 2 डिग्री की गिरावट आई है, जिससे मौसम में ठण्डक बढ़ गई है। रविवार सुबह भी सर्द हवाओं के साथ बादल छाए हुए हैं और ठंड का असर बना हुआ है। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक, जनवरी में सर्दी का असर अधिक रहेगा। शनिवार सुबह इंदौर में कोहरा था और 10 बजे के आसपास कुछ स्थानों पर 5 मिनट के लिए हल्की बारिश हुई। इसके बाद दिन में 15 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चली, जिससे मौसम में ठण्डक बढ़ गई। रात को भी ठंड का असर महसूस किया गया। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक, दिसम्बर के बचे दो दिनों में तापमान में और गिरावट आ सकती है। इसके बाद जनवरी में कड़ाके की सर्दी का दौर शुरू हो सकता है।

इंदौर में शार्ट सर्किट से कार में लगी आग

- बोनट से निकल रहा था धुंआ, परिवार ने समय रहते बचाई जान

इंदौर (नप्र)। इंदौर के राउ इलाके में रविवार सुबह एक कार में अचानक आग लग गई। आग की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया। फायर ब्रिगेड के अनुसार, सुबह करीब 6:30 बजे बिजलपुर इलाके से आग की सूचना मिली थी। दमकल की गाड़ी मौके पर पहुंची और पाया कि कार के बोनट से धुआं निकल रहा था। बताया गया कि शॉर्ट सर्किट के कारण कार में आग लगी थी। कार चला रहे विवेकनाथ पुत्र राधेश्याम और उनका परिवार कार में सवार था। इसके बाद चालक कार से बाहर निकलकर मौके से चला गया। फायर ब्रिगेड की टीम ने क्रेन की मदद से कार को हटाया। कार एक शासकीय वरिष्ठ अधिकारी की बताई जा रही है।

उत्तरप्रदेश का था परिवार

एसआई संतोष दुबे ने बताया कि कार में सवार परिवार उत्तर प्रदेश का रहने वाला था। परिवार महू से उत्तर प्रदेश जा रहा था। कार में विवेकनाथ के अलावा उनकी पत्नी भावना और बेटा भी सवार थे। बाद में परिवार ने दूसरी कार से यात्रा जारी रखी।

डॉक्टर को मारने वाले शूटरों पर ईनाम

तीन हत्यारों पर 5 हजार रूपए के इनाम की घोषणा , एमडी ड्रग के साथ पकड़ाए

इंदौर (नप्र)। डॉ. सुनील साहू के हत्यारों पर इंदौर जोन 1 के डीसीपी विनोद मीणा ने 5-5 हजार का इनाम घोषित किया है। आरोपियों को पकड़ने के लिए टीमें गुना और रीवा भेजी गई हैं। दिनभर पुलिस ने फैक्ट्री मजदूर से पूछताछ कर आरोपियों के हुलिए की जानकारी ली। ये वही मजदूर है, जिसके मोबाइल से हत्यारों ने कॉल किया था। पुलिस को इस मामले में अहम सुराग मिले हैं और जल्द ही आरोपियों की गिरफ्तारी का दावा किया जा रहा है। डीसीपी जोन 1 की टीम ने डॉक्टर के हत्यारों को पकड़ने के लिए 5 टीमें गठित की हैं। इधर, हत्यारों की जानकारी मिलने पर उन पर 5 हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया है। बताया जा रहा है कि हत्यारे स्थानीय नहीं हैं। उनकी भाषा बाहर के जिलों की प्रतीत होती है, इसी कारण पुलिस टीमें बाहरी जिलों में मूवमेंट कर रही हैं।

एमडी ड्रग के साथ तीन आरोपी गिरफ्तार: क्राइम ब्रांच ने एमडी ड्रग के साथ तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से 18 ग्राम एमडी ड्रग बरामद की गई है। एडीशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया के मुताबिक, क्राइम ब्रांच ने युसुफ उर्फ राजू (निवासी नंदलाल रोड, हातोद), शकील उर्फ शाकिर मंसूरी (निवासी श्रमिक कॉलोनी), और शाहरूख उर्फ गोलू (निवासी राउ) को गिरफ्तार किया है।आरोपियों के पास से 18 ग्राम ब्राउन शुगर और एक कार भी जब्त की गई है।

रातभर की चेकिंग में पकड़े गए 700 वाहन: इंदौर पुलिस के अधिकारियों ने शराब पीकर वाहन चलाने वाले 700 चालकों पर कार्रवाई की है। इन वाहनों को जब्त कर थानों में भेजा गया।इंदौर शहर के कई थानों में वाहनों को खड़ा करने के लिए जगह कम पड़ गई। शहरभर में 1981 बदमाशों को चेक करते हुए, 1195 पर कार्रवाई की गई। इनमें से कुछ बदमाशों को थानों में लाया गया।

इलाज के बहाने क्लीनिक आए थे शूटर्स

इंदौर में बदमाशों ने शुक्रवार रात करीब 11 बजे होम्योपैथी डॉक्टर की गोली मारकर हत्या कर दी। राजेंद्र नगर पुलिस के मुताबिक, कुंदन नगर में रहने वाले डॉक्टर सुनील साहू (28) को बदमाशों ने क्लीनिक में घुसकर गोली मारी। वे कैंट रोड स्थित अपने घर पर ही जीवन धारा नाम से क्लीनिक चलाते थे। जानकारी के मुताबिक तीन बदमाश सर्दी-जुकाम का इलाज कराने के बहाने क्लीनिक में आए थे। वे दवा लेकर बाहर निकले और कुछ ही मिनटों में चेहरे पर नकाब चढ़ाकर लौटे और डॉक्टर पर गोली चला दी।

उज्जैन में इटली, अमेरिका-पेरू के कपल ने लिए फेरे

वरमाला पहनाकर बोले- 'जीवन भर साथ रहेंगे', इंदौर में हुई मेहंदी-हल्दी की रस्में

उज्जैन (नप्र)। मध्यप्रदेश में इटली, अमेरिका और पेरू के 3 कपल ने सनातन रीति-रिवाज से शादी की है। उज्जैन में रविवार को फेरे लेकर सभी ने वरमाला पहनाई और कहा- 'जीवन एक-दूसरे के साथ

रहेंगे।' इससे पहले शनिवार को विवाह की आधी रस्में निभाई गई। इंदौर में मेहंदी, हल्दी और महिला संगीत हुआ। जिसमें तीनों कपल ने जमकर डांस किया। रविवार को सभी उज्जैन के इंदौर रोड स्थित ग्राम नैनोरा पहुंचे। यहां परमानंद योग आनंदमय पीठ में सुबह 10.35 बजे से विवाह की रस्में शुरू हुई। पूजन होने के बाद तीनों कपल डारियो संग मार्टिना, इअन संग गेब्रियला और मॉरजिओ संग नेल्मास के फेरे हुए। अब तीनों कपल नव वर्ष के बाद 3 जनवरी को इंदौर से इटली लौट जाएंगे।विवाह की रस्में पूरी करते डारियो-मार्टिना, इअन-गेब्रियला और मॉरजिओ-नेल्मास।

योग का प्रशिक्षण लेने आए थे, शादी कर लौटेंगे

तीनों कपल इंदौर के परमानंद इंस्टीट्यूट ऑफ योगा साइंस एंड रिसर्च इंडिया में योग प्रशिक्षण लेने इटली, अमेरिका और पेरू से आए थे। इंस्टीट्यूट में वे योग गुरुओं से समय-समय पर योग की कई क्रियाओं को समझने के साथ प्रैक्टिस करने लगे। इस दौरान उन्होंने भारतीय परंपरा, सनातन धर्म, पूजा-पाठ, त्यौहार, वैदिक पद्धति, विवाह पद्धति को लेकर गहनता से अध्ययन किया। यहां आने के बाद सभी ने वैदिक पद्धति से हिंदू नाम भी अपनाए हैं। तीन विदेशी युगल ने सनातन धर्म के अनुसार वैदिक पद्धति से विवाह करने का निश्चय किया था।

इंदौर में स्कूल मालिक के साथ धोखाधड़ी

3 पूर्व कर्मचारियों ने चेक पर फर्जी हस्ताक्षर कर बैंक से 15 लाख निकाले, एफआईआर

इंदौर (नप्र)। इंदौर के तिलक नगर निवासी 76 वर्षीय सीनियर सिटीजन राजेंद्र महाजन ने अपने तीन पूर्व कर्मचारियों के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज कराया है। पुलिस के अनुसार, आरोपियों ने नौकरी छोड़ने से पहले स्कूल और संस्था के चेक चोरी कर लिए थे। इन चेकों पर फर्जी हस्ताक्षर कर उन्होंने सीनियर सिटीजन और उनके बेटों के खाते से लाखों रुपए निकाले। पुलिस ने शिकायत के आधार पर कमलेश गुर्जर (निवासी बख्तावर राम नगर, मूल निवासी ग्राम सिनगुन, बजरंग वाली चौक, जिला खरगोन), विजय पाटीदार (ग्राम सिनगुन), और परीक्षित गंगराड़े (निवासी तिलक नगर) के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया है। राजेंद्र महाजन तिलक नगर एक्सटेंशन में इंडो किड्स स्कूल संचालित करते हैं और जैन सर्विस सोसायटी के अध्यक्ष हैं। उन्होंने बताया कि तीनों आरोपी उनके पूर्व कर्मचारी हैं, जिन्होंने दिसंबर 2023 में नौकरी छोड़ी थी। इससे पहले, आरोपियों ने स्कूल और संस्था के चेक और दस्तावेज चुराए और इन पर फर्जी हस्ताक्षर कर बैंक से 15 लाख रुपए से अधिक की हेराफेरी की। महाजन ने बताया कि, अगस्त 2024 में मेरे पास बैंक से पैसे निकालने का मैसेज आया। जिसके बाद मैंने जानकारियां जुटाना शुरू किया। इस दौरान मैंने पाया कि आरोपियों ने अलग-अलग समय पर मेरे और मेरे बेटों के चेक का इस्तेमाल कर फर्जी तरीके से राशि निकाली। घटना की जानकारी मिलने पर उन्होंने वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को शिकायत दी। पुलिस ने प्रारंभिक जांच के बाद धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

इंदौर आए स्वामी अवधेशानंद गिरी महाराज, बोले-

विश्व में सर्वाधिक अनुशासित कोई संगठन है तो वह है आरएसएस

इंदौर (नप्र)। रविवार को जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि महाराज इंदौर आए। मीडिया से चर्चा के दौरान उन्होंने महाकुंभ में आने के लिए आह्वान किया और कहा कि वे मोहन भागवत के विचारों का आदर करते हैं और उनसे सहमत हैं। दरअसल, स्वामी अवधेशानंद गिरि महाराज इंदौर में एक निजी कार्यक्रम में शामिल होने आए थे। मंत्री तुलसी सिलावट और विधायक मालिनी गौड़ ने उनका स्वागत किया। एयरपोर्ट पर स्वामी अवधेशानंद गिरि महाराज ने मीडिया से बातचीत की और सवालों के जवाब दिए।

महाकुंभ पर बोले स्वामी अवधेशानंद: प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ पर स्वामी अवधेशानंद ने कहा भारत की संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। जब

से मानव और प्राणी अस्तित्व में आए हैं, तब से भारत की सनातन संस्कृति विद्यमान है। सनातन संस्कृति के उच्चतम प्रतिमान, दिव्य मूल्य, गौरव, और वैभव को देखना हो तो महाकुंभ सबसे उपयुक्त स्थान है। उज्जैन में इसे सिंहस्थ कहा जाता है, हरिद्वार में कुंभस्थ और प्रयाग में महाकुंभ। इस बार प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ में 35 से 40 करोड़ श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। उन्होंने आगे कहा, यूनेस्को ने इसे सांस्कृतिक अमूर्त धरोहर घोषित किया है। इससे बड़ा और अनुशासित समागम दुनिया में कहीं नहीं हो सकता। मैं अहिल्याबाई होलकर की इस पवित्र धरती पर आया हूं, जो स्वच्छता और पवित्रता के लिए जानी जाती है। यह भारत के लिए आदर्श नगर है। मध्यप्रदेश के लोगों से मेरा आह्वान है कि वे महाकुंभ में जरूर आएं।

मोहन भागवत के विचारों पर जताई सहमति: मोहन भागवत के बारे में पूछे गए सवाल पर उन्होंने कहा आदरणीय मोहन भागवत जी हमारे आदर्श हैं। उन्होंने कहा है कि सबका आदर करना चाहिए और सबकी भावनाओं का सम्मान करते हुए देश में अच्छा वातावरण बनाना चाहिए। आदरणीय मोहन भागवत जी हिंदू समाज के रक्षक हैं।

इंदौर में रहवासियों ने महापौर से की शिकायत

- बताए अधूरे काम ; पुष्यमित्र भार्गव ने दिया एक महीने का अल्टीमेटम

इंदौर (नप्र)। रविवार को महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने भूरी टेकरी स्थित प्रधानमंत्री आवास योजना के अरावली परिसर के रहवासियों से महापौर सचिवालय में मुलाकात की। इस दौरान निगम के संबंधित अधिकारी भी मौजूद थे। बैठक में रहवासियों ने परिसर में अधूरे कामों को लेकर अपनी समस्याएं साझा की।

रहवासियों की मुख्य शिकायतें: परिसर के रहवासियों ने बताया कि लिफ्ट, स्ट्रीट लाइट, पेवर्स, कम्युनिटी हॉल, मेन गेट का जीर्णोद्धार, बाउंड्रीवाल पर तार फेंसिंग और

पानी के मीटर जैसी सुविधाएं अब तक पूरी नहीं हुई हैं।

महापौर ने दिए निर्देश: महापौर ने रहवासियों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए अधिकारियों को निर्देश दिया कि एक महीने के भीतर परिसर के सभी अधूरे कार्य पूरे किए जाएं। इसके बाद बिल्डिंग को रहवासियों को हैंडओवर कर दिया जाए।

देखरेख के लिए एसओपी: महापौर भार्गव ने अधिकारियों को प्रधानमंत्री आवास योजना के परिसर के लिए एक मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) तैयार करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि इस एसओपी की जानकारी परिसर के रहवासियों को दी जाए, ताकि वे परिसर की देखरेख में बेहतर भूमिका निभा सकें।

इंदौर के लुटेरों का दिल्ली में शॉर्ट एनकाउंटर

कारोबारी पिता-पुत्र से लूटे थे 25 लाख के गहने; 80 से ज्यादा वारदातों में शामिल थे

इंदौर (नप्र)। 11 नवंबर को इंदौर के तुकोगंज क्षेत्र में कारोबारी पिता-पुत्र के साथ 25 लाख के गोल्ड ज्वेलरी की लूट की हुई थी। इस वारदात में दो लुटेरों के सीसीटीवी फुटेज भी सामने आए थे। पुलिस ने उनकी पहचान और तलाश शुरू की। जांच में पता चला कि दोनों बदमाश दिल्ली के रहने वाले हैं। जब तुकोगंज पुलिस दिल्ली पहुंची, तो पता चला कि ये लुटेरे 80 से ज्यादा वारदात को अंजाम दे चुके हैं। दिल्ली पुलिस को भी इन लुटेरों की तलाश थी। रविवार सुबह पुलिस ने रोहित और रिंकू नाम के इन दोनों आरोपियों का शॉर्ट एनकाउंटर में गिरफ्तार कर लिया है।

सीसीटीवी फुटेज से मिले हुलिए से पहचान: टीआई जितेंद्र यादव ने बताया कि रेसकोर्स रोड पर रहने वाले व्यापारी कमलेश

खंडेलवाल, उनके बेटे और पड़ोसी से लूटपाट करने के बाद दोनों आरोपी फरार हो गए थे। उनके हुलिये के आधार पर पुलिस ने रोहित और रिंकू की भूमिका की पुष्टि की।

दोनों बदमाशों के पैर में गोली लगी: सूचना मिलने के बाद पुलिस ने बदमाशों के रास्ते पर जाल बिछाया। जैसे ही बदमाश इलाके में पहुंचे, पुलिस ने उन्हें रुकने का इशारा किया, लेकिन रुकने की बजाय बदमाशों ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। इस दौरान एक पुलिसकर्मी के बुलेट प्रूफ जैकेट पर गोली लगी। जवाबी कार्रवाई में दोनों बदमाशों के पैर में गोली लगी और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

दोनों पर 60 केस दिल्ली और एमपी में दर्ज

पुलिस ने गिरफ्तार बदमाशों की पहचान रोहित कपूर और रिंकू के रूप में की है। ये दोनों दिल्ली के द्वारका और ख्याला थानों के बैड कैरेक्टर हैं। पुलिस के अनुसार, इन दोनों पर करीब 80 आपराधिक मामले दर्ज हैं, जिनमें से अधिकांश लूट के हैं। इनमें से 60 केसदिल्ली और मध्य प्रदेश में दर्ज हैं।

संपादकीय

मनमोहन पर बेवजह विवाद

देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार व उनका स्मारक बनाने को लेकर कांग्रेस और विपक्षी पार्टियों द्वारा जिस तरह से विवाद खड़ा किया जा रहा है, वह दुर्भाग्यपूर्ण और अनावश्यक है। पहले कांग्रेस ने मांग की कि मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार निगमबोध घाट के बजाए किसी विशिष्ट स्थल पर किया जाकर वहीं उनका स्मारक भी बनाया जाए। क्योंकि इस ऊंचाई तक पहुंचने वाले वो सिख समुदाय के पहले व्यक्ति थे। लेकिन मोदी सरकार ने पार्टी की यह मांग अस्वीकार करते हुए कहा कि अंतिम संस्कार तो निगम बोध घाट पर ही होगा, लेकिन उनका स्मारक अन्यत्र बनाया जाएगा। इसके लिए एक ट्रस्ट भी बनेगा। इस उत्तर से नाखुश कांग्रेस नेताओं ने यह आरोप भी लगाया कि अंतिम संस्कार के दौरान भी सरकारी तंत्र ने स्व. डॉ. मनमोहन सिंह के परिजनों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। हालांकि डॉ. मनमोहन सिंह को अंतिम विदाई पूरे राजकीय सम्मान के साथ दी गई। जिसमें स्वयं राष्ट्रपति भी मौजूद थीं। उनके निधन पर देश में 7 दिन का राजकीय शोक भी घोषित हुआ। डॉ. मनमोहन सिंह का स्मारक बनाने की मांग को लेकर पूर्व में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखी थी। उसके बाद अकाली दल भी उसके समर्थन में आगे आ गया है और दिवगंत पूर्व प्रधानमंत्री के स्मारक निर्माण को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से दखल देने की मांग की है। डॉ. मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार निगमबोध घाट पर क्यों किया, इसके बारे में सरकार की ओर से तर्क दिया गया कि 2013 में तत्कालीन पीएम डॉ.मनमोहन सिंह की सरकार ने निर्णय लिया था कि भविष्य में विशिष्ट व्यक्तियों का अंतिम संस्कार अब सामान श्मशान घाटों पर ही किया जाएगा। आवश्यक होने पर उनका स्मारक अलग से बनाया जा सकता है। हालांकि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के अंतिम संस्कार पर यह नियम लागू नहीं हुआ। वैसे तार्किक बात यह है कि देश की राजधानी में हर पूर्व प्रधानमंत्री या विशिष्ट व्यक्ति के अंतिम संस्कार एवं स्मारक के लिए अलग से जमीन देना संभव नहीं है। क्योंकि दिल्ली में जमीन की बेहद कमी है। इस संदर्भ में मोदी सरकार का फैसला उचित ही लगता है। लेकिन चूंकि विपक्ष को मुद्दा बनाना है तो बनाया जा रहा है। दरअसल इसके पीछे असल राजनीति मनमोहन सिंह को राजनीतिक रूप से हाई जैक करने की है। कांग्रेस को डर है कि भाजपा एक और गैर गांधी कांग्रेस नेता के रूप में सरदार वल्लभभाई पटेल या पी.वी. नरसिंहराव की तरह हाई जैक कर सकती है। भाजपा की ओर से यह आरोप तो शुरू हो ही गए हैं कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मनमोहन सिंह सरकार का एक बिल सार्वजनिक रूप से फाड़कर उनका अपमान 15 साल पहले ही कर दिया था। असली पीएम तो सोनिया गांधी ही थीं। यहां तक कि उन्हें पीएम रहते हुए देश के प्रति उनकी सेवाओं के लिए भारत रत्न देने पर विचार नहीं हुआ, जबकि जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती इंदिरा गांधी ने पीएम रहते हुए ही देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न स्वीकार कर लिया था। कांग्रेस को यह भी भय है कि बीजेपी कांग्रेस पर मनमोहन की उपेक्षा करने का आरोप भी जड़ सकती है। दूसरा कारण दिल्ली प्रदेश के जल्द होने वाले चुनाव हैं। यहां पंजाबी और सिख आबादी बड़ी संख्या में रहती है। भाजपा डॉ. मनमोहन सिंह को मौका देखकर भारत रत्न देने की घोषणा कर सकती है ताकि उसका राजनीतिक लाभ लिया जा सके। जबकि कांग्रेस पहले ही यह मांग उठाकर भाजपा को यह लाभ लेने से रोकना चाहती है। जो हो रहा है, वह डॉ. मनमोहन सिंह की निष्काम भाव से काम करने की शैली के अनुरूप नहीं है।

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

पीकेसी नहीं, दशार्ण जल परियोजना नाम हो

एक तो मुझे यह भी आश्चर्यजनक व दुखद लगा कि उन्होंने पार्वती-कालीसिंध व चंबल के लिए पीकेसी शब्द का इस्तेमाल किया। यह अंग्रेजी के साम्राज्यवादी मानसिक दास्तां जैसी है। हम लोग भारत में संक्षिप्त नामों के इस्तेमाल के लिए हिन्दी या भारतीय भाषाओं के शब्दों का इस्तेमाल नहीं करते। दिल्ली में कस्तूरबा गांधी मार्ग को केजी मार्ग, लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल को एलएनजेपी, राममनोहर लोहिया अस्पताल को आरएमएल जैसे शब्दों का इस्तेमाल आज आजादी के सत्तर साल बाद किया जाना हमारी भारतीयता पर क्या प्रश्नचिन्ह नहीं है? मेरी जानकारी में ऐसा कोई उदाहरण अमेरीका या यूरोप में नहीं है जहां पर नाम के संक्षिप्तीकरण के लिए किसी विदेशी भाषा के शब्दों का इस्तेमाल किया जाता हो।

पिछले दिनों जयपुर में प्रधानमंत्री की मौजूदगी में पार्वती, कालीसिंध और चम्बल जोड़ो परियोजना के अनुबंध की सहमति पर मध्यप्रदेश, राजस्थान व केन्द्र के बीच हस्ताक्षर हुए हैं। निस्संदेह यह योजना एक महत्वपूर्ण योजना है जो मध्यप्रदेश, राजस्थान दोनों के लिए उपयोगी होगी। प्रधानमंत्री ने यह भी बताया कि 25 दिसम्बर को केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना की आधारशिला रखी जायेगी। बुंदेलखंड अंचल को नदियों के पानी की उपलब्धता के बारे में उपाय करेंगे। मैं प्रधानमंत्री को इन दोनों योजनाओं की शुरुआत के लिए धन्यवाद देता हूं। हालांकि इस अच्छी योजना के इतिहास के बारे में उन्होंने तथ्यों को सिकोड़ने का प्रयास किया है।

एक तो मुझे यह भी आश्चर्यजनक व दुखद लगा कि उन्होंने पार्वती-कालीसिंध व चंबल के लिए पीकेसी शब्द का इस्तेमाल किया। यह अंग्रेजी के साम्राज्यवादी मानसिक दास्तां जैसी है। हम लोग भारत में संक्षिप्त नामों के इस्तेमाल के लिए हिन्दी या भारतीय भाषाओं के शब्दों का इस्तेमाल नहीं करते। दिल्ली में कस्तूरबा गांधी मार्ग को केजी मार्ग, लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल को एलएनजेपी, राममनोहर लोहिया अस्पताल को आरएमएल जैसे शब्दों का इस्तेमाल आज आजादी के सत्तर साल बाद किया जाना हमारी भारतीयता पर क्या प्रश्नचिन्ह नहीं है? मेरी जानकारी में ऐसा कोई उदाहरण अमेरीका या यूरोप में नहीं है जहां पर नाम के संक्षिप्तीकरण के लिए किसी विदेशी भाषा के शब्दों का इस्तेमाल किया जाता हो।

वैसे तो प्रधानमंत्री, उनकी पार्टी, उनकी मातृसंस्था राष्ट्रभाषा-राष्ट्रीयता और भारतीयता के शाब्दिक गौरव को न केवल बयान करते हैं बल्कि दूसरों को नीचा दिखाने के लिए उसे हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

प्रधानमंत्री से मैं जानना चाहूंगा कि पीकेसी के बजाय पार्वती-कालीसिंध-चम्बल नदी इस्तेमाल करते तो क्या बिगड़ जाता? इन नदियों के नाम के पीछे इतिहास-संस्कृति भी है। परंतु प्रधानमंत्री और उनकी जमात का राष्ट्रभाषा और संस्कृति का दावा कितना खोखला है इससे सिद्ध होता है।

दूसरे, उन्होंने नदी-जोड़ योजनाओं का जनक पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई को बताया। यह सही है कि प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने नदी जोड़ो परियोजना का कुछ काम शुरू किया था। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के प्रति पूरे सम्मान के बावजूद मैं यह तथ्य बताना चाहूँगा कि यद्यपि वह बहुत आगे नहीं बढ़ पाया। यह भी जानना चाहिए कि नदी जोड़ योजना की वैचारिक शुरुआत अटल बिहारी वाजपेई ने नहीं, बल्कि इसकी वैचारिक शुरुआत डॉ राममनोहर लोहिया ने की थी। उन्होंने संसद में कहा था कि देश की दो बड़ी बीमारियां हैं, बाढ़ और सुखाड़। प्रतिवर्ष देश के बड़े इलाके में सूखा पड़ता है और देश के दूसरे बड़े इलाके में बाढ़ आती है। बाढ़ और सूखा लाखों लोगों को तबाह करता है। डॉ लोहिया ने संसद में तत्कालीन सरकार से अपील की थी कि नदियों का पानी जो बाढ़ में बर्बाद होता है। उसे सूखे खेतों तक ले जाया जाये जिससे बाढ़-सुखाड़ से मुक्ति मिले। तब के सिंचाई मंत्री श्री राव थे जिन्होंने इस योजना का अध्ययन कराया था। 1964-65 के साल में इस राष्ट्रीय परियोजना पर मात्र तीन सौ करोड़ रुपए की अनुमानित लागत थी। अब कोई भी योजना हजारों लाख करोड़ से कम की नहीं होती। कितना अच्छा होता कि यदि स्व. वाजपेई ने नदी-जोड़ परियोजना की चर्चा करते हुए संसद में डा. लोहिया के मौलिक योगदान का उल्लेख किया होता। परंतु इतिहास के पन्नों से वे भी बचना चाहते थे। उनसे भी शिकायत क्या करें, बड़े नामधारी समाजवादी साथी उस संसद में थे बड़े ओहदों पर, स्व. जार्ज फर्नांडीज उस सरकार में मंत्री थे, मुलायम सिंह संसद में थे, कितने ही समाजवादी पृष्ठभूमि के लोहिया के आन्दोलन से निकले हुए लोग संसद में थे, परंतु किसी ने अपने वैचारिक पिता डॉ लोहिया की याद नहीं की।

अटलजी की सरकार में जल-संसाधन मंत्री श्री सुरेश प्रभु थे जो बाल ठाकरे की शिवसेना कोटे के मंत्री थे। जब अखबारों में इस योजना का विरोध हुआ जो कि वैश्विक स्तर से प्रायोजित था और वैश्विक आर्थिक समर्थन से चलता था, जिन एनजीओ को इसलिए भारत में आर्थिक मदद दी जाती थी कि वे इन बुनियादी योजनाओं का विरोध करें ताकि भारत की खाद्यान्न आत्मनिर्भरता और पैदावार की वृद्धि दूर खिसक जाये, तब श्री सुरेश प्रभु मुझसे मिले थे। उन्होंने इस पर चर्चा की थी। मैंने उन्हें बताया था यह योजना मूलत: लोहिया जी की कल्पना थी तब मैंने इस पर काफी कुछ लिखा था, जिसे सुरेश प्रभु ने योजना के संदर्भ में इस्तेमाल किया। हालांकि पिछले तीस-पैंतीस वर्ष में काफी पानी बह चुका है, शायद अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण के अभाव में जिन एनजीओ की आवाज मीडिया में जोर से सुनाई देती थी, अब कुछ कम हुई है। वैश्विक परिदृश्य बदला है। विश्व बैंक के अंतर-समीकरण भी बदले। मुझे याद है उस समय श्री प्रभु ने यह कहा था कि इस योजना पर बहुत पैसा खर्च होगा, भारत सरकार पर इतना पैसा नहीं होगा। मैंने उन्हें कुछ सुझाव लिख कर दिये थे यथा-

1) इस योजना को राष्ट्रीय लक्ष्य घोषित किया जाये। नदियों को जोड़ने के लिए नहरों का जो जाल बिछाना है उसके लिये दो माह राष्ट्रीय जलयज्ञ माह घोषित हो। नेता, कर्मचारी, छात्र, किसान, मजदूर व सारा देश श्रमदान करें और इस योजना में सहभागी बनें।

2) कुल परियोजना पर जितना खर्च होगा उसे न्यायसंगत ढंग से बांटा जाये। यदि साठ फीसदी खर्च भारत सरकार उठाये तो चालीस फीसदी राज्य सरकार।

3) स्थानीय संस्थाओं, नगर निगम, नगर पालिका, नगर पंचायत, ग्राम पंचायत को भी इसमें हिस्सेदार बनाया जाये। यह संस्थायें पैसा तो नहीं, परंतु श्रमिक अन्य संसाधन उपलब्ध करा सकती हैं।

4) जिन किसानों की जमीन पर नहर निकाली जायेगी, जो सिंचाई के पानी से लाभान्वित होंगे उन्हें भी हिस्सेदार बनाया जायेगा। अगर वे अपनी जमीन पर नहर खोदते हैं तो उस राशि को मय ब्याज के आगामी जलकर में समाहित किया जायेगा, यह नीति बने।

अगर यह निर्णय सरकार ने किया होता तो लाखों किसान अपनी जमीन पर नहर खोदते, योजना के क्रियान्वयन में सहयोगी बनते।

श्री सुरेश प्रभु बहुत उत्साहित थे परंतु स्वर्गीय बाल ठाकरे की नजरों में वे संदिग्ध हो चुके थे इसलिए उनके राजनीतिक भविष्य का असमय अंत हो गया।

मैं प्रधानमंत्री से अपील करूंगा कि अभी भी वक्त है वे सार्वजनिक रूप से लोहिया जी के वैचारिक योगदान को स्वीकार करें और इतिहास के इस पक्ष को भी प्रदर्शित करें। इससे उनका सम्मान ही बढ़ेगा।

आज भी यह उपयुक्त होगा कि मात्र दो योजनाओं पार्वती-कालीसिंध-चम्बल तथा केन- बेतवा तक ही सीमित न किया जाये बल्कि इसे देश में बाढ़-सूखे से स्थायी मुक्ति के हल के रूप में देखा जाये और देशभर में लागू किया जाये।

प्रतिवर्ष उत्तर बिहार की नदियों गंडक, कोसी आदि में बाढ़ आती है और लाखों करोड़ की क्षति होती है, तथा झारखंड से लेकर छत्तीसगढ़ तक सूखे से लाखों किसान तबाह होते हैं और फिर सूखा राहत पर भी लाखों करोड़ खर्च होता है। आजादी के बाद अभी तक अगर बाढ़ व सूखा राहत पर खर्च हुई राशि का आंकड़ा निकलवाया जाये तो शायद भारत के केंद्रीय बजट 30 लाख करोड़ रुपये से कम नहीं होगा और इसके बावजूद भी बाढ़ व सूखा यथावत है।

देश के आमजन, किसान को इस जलयज्ञ में सहभागी बनाया जाये। हालांकि यह कठिन होगा क्योंकि सूखा-बाढ़ देश के भ्रष्टाचार के स्थायी स्त्रोत हैं। सूखा राहत व बाढ़ राहत पर कई लाख करोड़ रुपए खर्च हो चुके हैं क्योंकि इसका कोई हिसाब किताब नहीं। बाढ़ राहत का पैसा आया वह भ्रष्ट तंत्र, नौकरशाह व नेताओं के पेट में चला गया। यहीं स्थिति सूखे की है।

हम लोग तो लगातार यह मांग कर रहे हैं कि बाढ़ और सूखे से राहत नहीं, मुक्ति चाहिए। यह मुक्ति ही डॉ लोहिया को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पार्वती, कालीसिंध, चंबल, केन, बेतवा आदि नदियों का अंचल मालवा, राजस्थान व बुन्देलखण्ड में जाल फैला है। जयंत तोमर के अनुसार महाकवि कालिदास ने जिस दशार्ण क्षेत्र का उल्लेख किया है वह इसी अंचल से संबंधित है। अच्छा हो कि योजना को पीकेसी के बजाय दशार्ण जल परियोजना कहा जाये। यह भारतीय भी होगा, ऐतिहासिक भी और सांस्कृतिक भी।

कृषि

गुरविंदर सिंह घुमन

(लेखक कृषि मामलों के जानकार)

बाजार की अपूर्णता से किसान हलकान

एक बार फिर पंजाब में किसान सड़कों पर हैं। ये आंदोलन लंबे समय से जारी है। यूं ही कोई इस रक्त जमाती सर्दी में सड़क पर नहीं उतर आता। दरअसल, किसान के दर्द को संवेदनशील ढंग से समझने की जरूरत है। इसे राजनीतिक चश्मे से सुना जाना चाहिए। सरकारों को ऐसे देखना चाहिए, जैसे पिता बच्चों की फिक्र करता है। अन्नदाता का बार-बार सड़क पर उतरना देश हित में नहीं है। इसमें दो राय नहीं है कि देश ने सदियों तक की गुलामी का दौर देखा है। रियासतों के वजीर से लेकर जमींदार तक किसानों का शोषण करते थे उनके करिंदे किसानों के हित नहीं देखते थे। देश में बाढ़, सूखे और अकाल की मार का सबसे ज्यादा शिकार किसान को ही होना पड़ा।

आजादी के बाद देश में कई किसान सुधार लागू हुए। लेकिन उन में कई तरह की खामियां थी। खेतों की जोत को चकबंदी के द्वारा नियंत्रित किया गया। परिवारों में बंटवारे की वजह से लगातार जमीन छोटी होती जा रही है। किसान का परिवार खेती से जीवन यापन न कर सका तो उसके बच्चे शहरों में काम-धंधे की तलाश में जाने लगे। लेकिन देश में छोटी जोतों की समस्या बनी रही। बड़े जमींदारों को ये भय सदैव रहा कि कब सरकार जमीन का आकार सीमित कर दे। कब उसकी जमीन ले ली जाये। दरअसल, तमाम विसंगतियों के बावजूद जरूरी है कि किसान को परफेक्ट बाजार मिले। किसान को उसकी मेहनत का सही दाम मिले। उसे कई तरह के टैक्स न देना पड़े। बिचौलिये उसके मुनाफे का हिस्सा नहीं ले जाएं।

दरअसल, किसान को जहां मौसम की मार से नुकसान उठाना पड़ता है, वहीं अकसर अतिवृष्टि व बाढ़ जैसी समस्याओं से जूझना पड़ता है। कभी टिड्डियों के हमलों से फसल बर्बाद होती है। कभी फसल बंपर हो जाये तो बाजार में फसलों के दामों में गिरावट आ जाती है। जैसा कि कई बार हुआ कि किसानों को अपनी आलू व प्याज की फसल को सड़कों में फेंकना पड़ा। या फिर भरी फसल में ट्रैक्टर चलाना पड़ा। दरअसल, फसल को मंडी ले जाने का खर्चा भी किसान नहीं उठा पाता। किसानों को अपना कर्ज भी चुकाना होता है। अपना परिवार भी पालना होता है। लेकिन जब लागत ही नहीं आती तो उसे आत्महत्या तक करने को मजबूर होता है। जितनी नकदी फसलें होती हैं उनका खर्चा भी ज्यादा होता है। खाद, बीज और डीजल के दाम बढ़ने से उसकी लागत बढ़ जाती है।

निस्संदेह, यदि सरकार बाजार को परफेक्ट बना दे तो किसान को उसकी मेहनत का पूरा पैसा मिल जागा। देश में अच्छी सड़कें हों। अनाज ढोने के साधन सस्ते मिल जायें। किसान को पसीना सूखने से पहले फसल का दाम मिल जाये तो किसान की कई समस्याओं का

समाधान निकल जायेगा। हमारे देश में खेती व्यापार नहीं है। किसान बाजार के खेल को नहीं जानता। फसल पूरी होती है तो किसान को फायदा नहीं मिलता। उपभोक्ता को भी सस्ता अनाज नहीं मिलता। तो कौन इस बंपर फसल का फायदा उठा रहा है? मानना है कि बाजार को परफेक्ट बनाया जाये, बिचौलियों से किसान को बचाया जाये तो उसकी तमाम समस्याएं खत्म हो जाएंगे। आज देश में अनाज भंडारण की व्यवस्था बड़े पैमाने पर करने की जरूरत है। ताकि किसान खेत से तुरंत फसल उठाकर औने-पौने दाम में बाजार में न जाये। जिससे उसे फसल कम दाम में बेचनी पड़ी। आशा है इन सवालों पर देश में मंथन होगा तो किसान की समस्याओं का समाधान हो सकेगा। किसान आंदोलन की वजह से जिन तीन सुधार कानूनों को वापस लेना पड़ा, उस दिशा में फिर बढ़ने की जरूरत है। किसान संगठनों, बुद्धिजीवियों, कृषि विशेषज्ञों तथा कृषि विशेषज्ञों की राय लेकर आगे बढ़ा जाये। 21 वीं सदी में हमारी जनसंख्या डेढ अरब पार कर जायेगी। इतनी बड़ी आबादी का पेट भरने के लिये कृषि में सुधारों की जरूरत है। साथ ही किसान की आय बढ़ाने के लिये भी यह जरूरी है। निस्संदेह ढर्रे पर चल रही खेती को उत्पादक बनाने तथा किसान को उसकी मेहनत का सम्मानजनक कीमत देना समय की जरूरत है। लेकिन इससे पहले कृषक के मनोविज्ञान को समझने और उसकी असुरक्षा की भावना को भी समझना जरूरी है। यदि कुछ बिंदुओं पर ध्यान दिया जाये तो देश में जारी किसान असंतोष खत्म किया जा सकता है। बस किसान को समझ आना चाहिए कि बदलाव उसकी भलाई में है।

पूरे देश में अनाज, फल व सब्जी की उत्पादकता भौगोलिक क्षेत्र, वातावरण व मौसम के हिसाब से अलग-अलग है। ऐसे में लागत व उत्पादक के हिसाब से किसान को एक जैसी कीमत नहीं मिल पाती। जिससे उसका मुनाफा क्षेत्र के हिसाब से कम ज्यादा होता है।

एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि देश में अस्वस्थ कंपटीशन, अस्वस्थ बाजार, अनियंत्रित बाजार में बिचौलियों की भूमिका अत्यधिक है। वहीं उत्पादों की बिक्री के लिए सुनियोजित बाजार नहीं है, जिसकी वजह से किसान को उसकी उपज का वाजिब दाम नहीं मिल पाता। ऐसे में मूल विरोध कृषि सुधार कानूनों का नहीं है,बल्कि बाजार की असुरक्षा का है क्योंकि सिस्टम किसान को उसको वाजिब हक नहीं देता। किसी भी सुधार से पहले काश्तकार के दिमाग में ये प्रश्न उसे परेशान करते हैं। विडंबना है कि पूरे देश में करीब छह प्रतिशत किसानों को ही न्यूनतम समर्थन मूल्य का लाभ मिल रहा है। खासकर पंजाब, हरियाणा व पश्चिम उत्तर प्रदेश में हरित क्रांति के क्षेत्र में ही मूलतः किसानों को इसका लाभ मिलता है। ऐसे में आमदानी की निश्चितता को लेकर क्षेत्र का किसान केवल गेहूं व धान की फसल को ही प्राथमिकता के आधार पर उगा रहा है। जिसका नुकसान यह है कि किसान फसलों की विविधता पर ध्यान नहीं देता। बाजार की असुरक्षा को देखकर वह नकदी फसलों की बुवाई को प्राथमिकता नहीं देता। इसी वजह से काश्तकार सुधारों का विरोध करता है। भारत में उपभोक्ता की पसंद की वजह से फलों व सब्जियों का बाजार स्थापित हो रहा है। बाजार में यह उत्पाद उपलब्ध भी हैं और इसकी मांग भी है। लेकिन आम सब्जी किसानों व फल उत्पादकों को इसके व्यावसायिक उत्पादन का ज्ञान नहीं दिया गया। यह जानकारी नहीं है कि जल्दी खराब होने वाली सब्जी व फल का कैसे संग्रहण किया जाये, वेयरहाउसिंग की सुविधा नहीं है तथा दूर के राज्यों में भेजने के लिए कोल्ड स्टोरेज चेन का अभाव है। इसके अभाव में बाजार का विस्तार नहीं हो पाता और किसान को औने-पौने दाम में अपनी फसल अपने आसपास के बाजार में बेचनी पड़ जाती है। दूसरे हम कृषि उत्पादक राज्यों में खेती पर आधारित उद्योगों का विकास नहीं कर पाए हैं। कह सकते हैं कि हमारी एग्रो इंडस्ट्री अभी अधूरी है। यदि हम इसे आजतक इसे विकसित कर पाते तो किसान को उसकी फसल का वाजिब दाम मिल पाता। किसान समृद्ध होता और देश निर्यात की दिशा में बढ़ सकता था। सरकार और किसान को टकराव को टालने के लिये जरूरी है कि सरकार जिन राज्यों में किसानों से धान व गेहूं न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदती है, उन्हें लिखित रूप में आश्वासन दे कि अगले पांच साल तक खरीदती रहेगी। फिर प्रायोगिक तौर पर अगले तीन सालों के लिये सुधार कानूनों को सरकार,कृषि विशेषज्ञों तथा किसान संगठनों के विचार-विमर्श के बाद लागू किया जाये। इसके साथ किसानों के जो भी अन्य मसले हैं, उनका भी समाधान निकालने की दिशा में काम करे।

मनमोहन सिंह से कुछ सवाल न पूछ सका

स्मृति लेख

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

उनकी शांत और उजली छबि के प्रति मेरे मन में आदर का भाव रहा है। मैं अर्थ विशेषज्ञ तो नहीं पर मुझे यह विश्वास भी रहा है कि डॉ. मनमोहन सिंह ने विश्व व्यापार व्यवस्था के बीच भारत की अर्थ व्यवस्था को संभाले रखने में विवेकपूर्ण भूमिका ज़रूर निभायी है। उन्होंने भारत के वित्तमंत्री के रूप में और फिर प्रधानमंत्री का कर्तव्य निभाते हुए बहुराष्ट्रीय कुबेरों की प्रतिष्ठा के लिए देश का आंगन लीपकर और उसमें भांति-भांति की व्यापार नीतियों के चौक पूरकर उनका आवाहन किया। इतिहास में डॉ. मनमोहन सिंह भारत में विश्व बाज़ार के महायज्ञ के प्रथम पुरोहित मानें जायेंगे। उनसे यह पूछने की मेरी इच्छा पूरी न हो सकी कि उनके कार्यकाल के बाद अभी जो देश की सार्वजनिक संपत्तियों को मोनिटाइजेशन के नाम पर विश्व बाज़ार में पेश किया जा रहा है, क्या वे इसे उचित मानते थे क्योंकि कम ही सही कुछ परिसंपत्तियां तो उन्होंनें भी निजीक्षेत्र के हवाले की थीं। अब देश के सार्वजनिक साधन अगर इतनी बड़ी तादाद में किराये पर उठाकर बड़ी पूंजी जुटाने का निर्णय लिया जा रहा है तो क्या वह देशहित में हैं? मैं उनसे यह आशा करता रहा कि वे एक पूर्व प्रधानमंत्री और अर्थशास्त्री के रूप में इसकी तार्किक व्याख्या देश के लोगों के सामने जटिल अंग्रेजी में नहीं बल्कि सरल हिंदी में पेश करेंगे कयोंकि हम परेशान हैं कि कहीं हमारे देश की अर्थव्यवस्था खतरे में न पड़ जाये। अगर वह ठीक नहीं चल रही है तो डॉ. साहब उसका सच हमें बता देंगे।

मैं किसी राजनीतिक दल में नहीं हूं बस एक नागरिक के रूप में चिंता से भरकर उनसे यह सवाल इसलिए पूछना चाहता था क्योंकि हमारे देश के राजनीतिक दलों के नेतागण तो इस विषय पर तार्किक व्याख्या करने में असमर्थ दिखायी देते हैं। वे केवल इधर-उधर की फुटकर बातें करके सत्ता पाने के खुदरा व्यापार के सपने में खोये हुए हैं। वे अपने ही देश के पूंजी निर्माताओं को चुनावी सभाओं में कोसते तो रहते हैं पर वे हमें यह नहीं बता पा रहे कि इस भूमण्डीकरण के काल में उनके दल की अर्थनीति क्या होगी। आजकल चुनाव जीतने के लिए मुफ़्त बिजली-पानी बॉंटने की राजनीतिक होड़ मची है। मुफ़्त पैसा बॉंटने की योजनाओं की घोषणाएं सुनकर लगता है जैसे जनमत की बोली लगाकर उसे खरीदा जा रहा हो... मैं राजकोष की इस लूट पर उस पके हुए अर्थशास्त्री की बेबाक राय न जान सका। मुझे उनसे पूछना था कि वर्तमान सरकार तो आपकी ही विश्वबाज़ार नीतियों को आगे बढ़ा रही है। इसीलिए आप ही हम भारत के लोगों को यह बताने में समर्थ हैं कि दुनिया के नये बाज़ार के रंगमंच पर खेले जा रहे पूँजी के इस नाटक के संदर्भ में आज भारत की सत्ता के गलियारों में जो स्क्रिप्ट लिखी जा रही है, इसका सुखान्त होगा या हम भारत के लोग एक गहरे दुखान्त का सामना करते हुए इतने बड़े लोकतंत्र की रंगशाला में अपने आंसू बहाते रहे जायेंगे?

मैं उनसे यह पूछना ही भूल गया कि विश्व की बड़ी अर्थ व्यवस्था बनने का ख़्वाब देखते हमारे नेता देश के बच्चों की शिक्षा और नागरिक स्वास्थ्य की मद में बहुत कम बजट प्रावधान क्यों करते हैं? क्या उन्हें लोगों के शिक्षित और स्वस्थ होने से डर लगता है? मुझे उनसे यह पूछना था कि किस कारण से हमारे प्रतिभाशाली बच्चे दूर देशों में जाने का सपना पाल रहे हैं और जो यहाँ हैं उन्हें यथासमय रोजगार क्यों नहीं मिल पाता? मैं उनसे यह भी तो नहीं पूछ पाया कि आज़ादी के पचहत्तर साल बाद भी देश की अर्थ व्यवस्था में ग़रीबी और कब तक राजनीतिक नारा बनी रहेगी? डॉ. मनमोहन सिंह को अलविदा कहते हुए दो आंसू मेरी आंखों की कोरों पर उन प्रश्नों की तरह ठिठके हुए हैं जो मैं उनसे कभी पूछ नहीं पाया। उनने कभी संयोगवश इन प्रश्नों के बारे में कुछ कहा हो तो मैं ही सुन नहीं पाया। देश में रोज़ होने वाली राजनीतिक कहा-सुनी का ही इतना शोर है कि काम की बात उस शोर में सुनायी नहीं देती। वाणी में कई अवरुद्ध प्रश्न अटके हुए हैं। अब तो वे उत्तरदायी नायक भी खोजे नहीं मिलते जो कि समाधान की दिशा में चलते हुए दिखायी दे रहे हों और उनसे ये प्रश्न पूछे जा सकें। डॉ मनमोहन सिंह को शायरी खूब पसंद थी। उन्होंने कभी संसद में मिर्ज़ा ग़ालिब का यह शेर सुनाया था... हमको उनसे है वफ़ा की उम्मीद जो नहीं जानते वफ़ा क्या है .....

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. सुधाकर आशावादी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

बीती ताहि बिसारने के दिन

जिंदगी में सदा मीठी बातें करो, कड़वी बातों में जीना है किस काम का, प्रवचन सुनने में अच्छा लगता है, मगर क्या आज के दौर में ऐसा संभव है। सर्वविदित है कि समय गति का परिचायक है, परिवर्तन का परिचायक है। जिसने भी घड़ी का आविष्कार किया होगा, उसका उद्देश्य यही रहा होगा, कि लोग समय के साथ समायोजन करने में समर्थ हों। सेकिंड से मिनिट और मिनिट से घंटों की अवधि तय करते हुए दिन, सप्ताह, महीने साल सफर नए वर्ष में कब परिवर्तित हो जाता है और कब नया वर्ष बीते साल में बदलकर अतीत बन जाता है, इसका पता किसी समृद्ध व्यक्ति को नहीं चलता, अलबत्ता धन और सुविधाओं के अभाव वाले व्यक्ति को अवश्य ही समय का ज्ञान रहता है, कि जिसे आँख खुलते ही अपना पेट भरने के लिए भटकना पड़ता है। वह अपने आप को बार बार अच्छे दिन आने की दिलासा देकर समझाता रहता है, कि सब्र कर, अपने भी अच्छे दिन आएंगे।

एक समय था कि जब हैप्पी न्यू ईयर का बड़ा क्रेज हुआ करता था, विदेशों से नए साल का जश्न मनाएं जाने की शुरुआत होती थी, आतिशबाजी के अलग नज़ारे हुए करते थे, भारत तक आते आते न्यू ईयर का क्रेज कुछ कम हो जाया करता था। उस दौर में हर जेब में मोबाइल अपना स्थान नहीं बना पाया था। चिट्ठी पत्री का दौर था। बाजार में ग्रीटिंग कार्ड से दुकाने सज जाया करती थी। विशिष्ट संदेश लिखे ग्रीटिंग कार्ड आकर्षण का केंद्र हुआ करते थे। संदेशों का आदान प्रदान डाकघरों के माध्यम से हुआ करता था। पोस्टमैन की भूमिका सर्वाधिक हुआ करती थी। घर परिवारों में पोस्टमैन की प्रतीक्षा अधिक की जाती थी। पोस्टमैन को देखते ही परिवारों में विशेष संदेश की उम्मीद जाग जाया करती थी। नया वर्ष अब भी आता है, मगर कुछ नयेपन का एहसास नहीं कराता। रोज की तरह भोर का सूरज नए दिन की घोषणा करता है और धीरे धीरे पुराने ढर्रे पर जिंदगी चल पड़ती है।

ज़िंदगी में नयेपन की तलाश चलती रहती है। जिसे देखो, वही बीती ताहि बिसारि के आगे की सुधि लेना चाहता है, मगर आगे की सुधि तो तभी अच्छी तरह से ली जा सकती है, जब पिछले दायित्वों को पूर्ण किया जा चुका हो। ऐसा अक्सर नहीं होता। यह कहने भर तक ही सीमित रहता है कि छोड़ों कल की बातें, कल की बात पुरानी, नए दौर में लिखेंगे, सब मिलकर नई कहानी, हम हिंदुस्तानी। हम हिंदुस्तानी तो हैं, मगर क्या हम कल की बातें छोड़ने के लिए तैयार हैं ? सवाल यह भी है। नया साल तो हर बरस आता है, यह कुम्भ का मेला नहीं हो बारह बरस में एक बार आए। इसे आना ही है। सवाल यह है कि क्या हम नयेपन के लिए उन सभी पूर्वाग्रहों को त्यागने के लिए तैयार हैं, जिनके अंतर्गत हम रंगभेद, जाति भेद, किसी धर्म के आस्था भेद के भेदभाव से मुक्त होकर मानवता के सुर में सुर मिलाने के लिए तैयार हों ?

इक्कीसवीं सदी अपनी शतकीय पारी के पच्चीसवें पायदान पर कदम रख रही है और हम आज भी ऐसे संकीर्ण पिछड़ेपन में जी रहे हैं, जिसमें उद्दात्त विचारों का अभाव है। आदमी भूख से अधिक खाने की फिराक में लगा है। अपनी थाली पर उसकी नजर नहीं है। वह औरों की थाली पर बुरी नजर गड़ाए हुए है। गरीबों, दलितों, वंचितों के नाम की माला जपते हुए लोग अपनी और अपने परिवारों की समृद्धि व सम्पन्नता की राजधानी बनाने में जुटे हैं। बेघर के आदमी को मुफ्त में घर और भूखे को मुफ्त की रोटी का सपना दिखाने वाले मदारी डुगडुगी बजा रहे है। साथ में शोर मचा रहे हैं - कागज़ कलम दवात ला, लिख दूँ घर तेरे नाम सनम।

नया साल अपनी जगह और अपनी अपनी परिस्थितियां अपनी जगह। नया साल आँखों में सतरंगी सपने बुनता ही है, मगर यह सवाल हर बरस दिमाग में कौंधता रहता है, कि आधुनिक व्यवस्था में जब व्यवस्था सड़ी गली और पुरानी ही रहती है, सिर्फ सत्ता बदलती रहती है, के दौर में क्या हम बीती ताहि बिसारने की स्थिति में कभी होते हैं ? क्या नया वर्ष हमारे भीतर ऐसे भावों का संचरण करता हैं, जिससे कहा जाए कि देश के प्रत्येक परिवार में मन में इकत्तीस दिसंबर की मध्यरात्रि में हैप्पी न्यू ईयर की फीलिंग महसूस देती है।

कानून और न्याय

पुरुष भी पीड़ित है-1

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

पुरुष भी महिला हिंसा से पीड़ित

हम अक्सर महिलाओं के साथ होने वाली घरेलू हिंसा के बारे में सुनते हैं, जिसमें पुरुषों को नुकसान पहुंचाने वाले के रूप में देखा जाता है। लेकिन, आजकल चीजें तेजी से बदल रही है। पुरुष भी घरेलू हिंसा के शिकार हो सकते हैं। उन्हें मौखिक, शारीरिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक या यौन शोषण का अनुभव हो सकता है। बेंगलुरू में मरने वाले उत्तर प्रदेश के 34 वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर अतुल सुभाष द्वारा छोड़े गए सुसाइड नोट ने पारिवारिक अदालत प्रणाली के अंधेरे पक्ष पर प्रकाश डाला है।

भारत में, एक आम धारणा है कि पुरूषों को सख्त होना चाहिए और अपनी भावनाओं को छिपाना चाहिए। इससे पुरूषों के लिए अपनी पीड़ा व्यक्त करना कठिन हो जाता है। भारतीय दंड संहिता की धारा 498ए जैसे कानून महिलाओं को क्रूरता से बचाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। लेकिन पुरुषों को घरेलू हिंसा के शिकार के रूप में मान्यता नहीं देते हैं। जहां भारत में महिलाओं को हिंसा से बचाने के लिए सख्त कानून हैं। वहीं दूसरी ओर पुरुषों को समान स्थितियों में बचाने के लिए कानून की कमी है। दुर्भाग्य से, बहुत से लोग यह नहीं मानते कि महिलाएं पुरूषों को नुकसान पहुंचा सकती है। लेकिन व्यक्तिगत साक्षात्कार और अनुभव बताते हैं कि पुरूषों को भी घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ता है। हाल ही की एक घटना में मुन्नेकोल्लाल निवासी अतुल सुभाष ने अपने अपार्टमेंट के अंदर आत्महत्या कर ली। उनकी मृत्यु के बाद, उनके भाई विकास कुमार ने सोमवार को सुभाष की अलग पत्नी निकिता सिंघानिया, उनकी मनिषा, भाई अनुराग और चाचा सुशील के खिलाफ शिकायत दर्ज की, जिसके बाद मराठाहल्ली पुलिस ने उन पर आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज किया।

अपनी शिकायत में कुमार ने आरोप लगाया कि उसके ससुराल वालों की लगातार प्रताड़ना और मांगों ने सुभाष को किनारे कर दिया था। सुभाष उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे और उन्होंने 2019 में एक सॉफ्टवेयर पेशेवर निकिता से शादी की। बाद में वे अलग हो गए। सुभाष पर कई आरोपों के तहत नौ मामले चल रहे थे। इनमें हत्या, दहेज उत्पीड़न, अप्राकृतिक यौन संबंध आदि शामिल थे। कुछ मामलों में उनके माता-पिता को भी आरोपी के रूप में नामित किया गया था। पुलिस ने कहा कि सुभाष ने 24 पन्नों का एक नोट छोड़ा था, जिसमें उसने अपनी आपबीती सुनाई थी और अपनी गर्दन पर एक बोर्ड के साथ 81 मिनट का एक वीडियो भी पोस्ट किया था। इस पर 'जस्टिस इज ड्यू' लिखा अर्थात न्याय शेष है था। उन्होंने यह भी आरोप लगाया था कि उत्तर प्रदेश में उनके ससुराल वालों का पक्ष लेने वाले पारिवारिक न्यायालय के एक न्यायाधीश पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया गया था।

बेंगलुरू में मरने वाले उत्तर प्रदेश के 34 वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर अतुल सुभाष द्वारा छोड़े गए सुसाइड नोट ने पारिवारिक अदालत प्रणाली के अंधेरे पक्ष पर प्रकाश डाला है। 20 पन्नों से अधिक के सुसाइड नोट और वीडियो में, जहां सुभाष ने अपनी पत्नी के साथ अपने इतिहास, अदालती मामले और उनके परिवार और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का विवरण दिया है, ने व्यवस्था के बारे में गंभीर चिंताएं पैदा कर दी है। सुभाष के पत्र में उनकी पत्नी, उनके परिवार और यहां तक कि अदालत प्रणाली पर भी उन्हें जीवन समाप्त करने के फैसले की ओर धकेलने के गंभीर आरोप लगाए गए हैं। हालांकि, आत्महत्या के लिए उकसाने से संबंधित प्रावधानों पर एक नजर डालने से यह सवाल उठता है कि क्या यह मामला सख्त कानूनी परिभाषा के दायरे में आएगा।

आत्महत्या के लिए उकसाने के मामलों में सर्वोच्च न्यायालय और विभिन्न उच्च न्यायालयों के विभिन्न निर्णयों में, विशेष रूप से ऐसे मामलों में जहां ससुराल वालों की क्रूरता के कारण महिलाएं आत्महत्या कर लेती हैं, यह नोट किया गया है कि ऐसे मामलों में उकसाने के ''घटकों'' पर विचार किया जाना चाहिए। जबकि मृत्यु पूर्व बयान या सुसाइड नोट को महत्वपूर्ण साक्ष्य के रूप में देखा जाता है। अदालतों ने माना है कि आत्महत्या के लिए उकसाने के अपराध के लिए मृत्यु पूर्व बयान या सुसाइड नोट भी सजा के लिए पर्याप्त नहीं है। भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) आत्महत्या के लिए उकसाने को परिभाषित करने के लिए पिछले भारतीय दंड संहिता की तरह ही भाषा का उपयोग करती है।

भारतीय न्याय संहिता की धारा 108 में कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति आत्महत्या से मर जाता है, तो जो कोई भी ऐसी आत्महत्या के लिए उकसाता है, उसे दस साल तक की कैद सजा दी जाएगी और जुर्माना भी लगाया जा सकता है। किसी आपराधिक कृत्य के लिए उकसाने'' का अपराध बीएनएस की धारा 45 के तहत उकसाने शब्द की एक विस्तृत परिभाषा भी देता है। सुभाष के सुसाइड नोट में उनकी पत्नी के कार्यों के कारण उन्हें महसूस हुई निराशा का विस्तृत विवरण दिया गया है। यहां तक कि दो उदाहरणों का भी हवाला दिया गया है जहां उनकी पत्नी और सास ने उन्हें आत्महत्या करके मरने के बारे में ताना मारा था। तब भी यह सवाल पूछा जा सकता है कि क्या इसे उसके खुद की जान लेने के फैसले का निकटतम या प्रत्यक्ष कारण माना जा सकता है।

सर्वोच्च न्यायालय की न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति प्रसन्ना बी वराले की पीठ ने अपने हालिया फैसले में इस बात पर जोर दिया कि केवल उत्पीड़न आत्महत्या के लिए उकसाने के लिए पर्याप्त नहीं है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष उकसावे को सिद्ध किया जाना चाहिए। अदालत ने एक महिला को आत्महत्या के लिए मजबूर करने के आरोपी तीन लोगों को उकसाने के आरोप से बरी कर दिया। जबकि क्रूरता के आरोपों को बरकरार रखा। यह फैसला आत्महत्या के लिए उकसाने के मामलों में स्पष्ट इरादे की आवश्यकता को स्पष्ट करता है। आत्महत्या के लिए उकसाने की धारा पुलिस अधिकारियों द्वारा दंडात्मक कानून के सबसे अधिक दुरूपयोग में से एक लगती है। क्योंकि, पुलिस मृतक और संदिग्ध के लिंग और स्थिति के आधार पर इस धारा को अलग-अलग तरीके से लागू करती है। हालांकि जब आरोपी एक महिला होती है तो वे नरमी दिखाते हैं, लेकिन पुरूषों पर मामला दर्ज करने और उन्हें गिरफ्तार करने में वे अनुचित जल्दबाजी करते हैं, खासकर जब मृतक एक महिला होती है।

एक अन्य मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसा माना है कि दहेज विरोधी कानून विवाहित महिलाओं को दहेज उत्पीड़न से बचाने के लिए बनाया गया था। लेकिन सभी पारिवारिक विवाद के मामलों में आईपीसी की धारा 498-ए के इस प्रावधान का उपयोग करना कानून के खुले दुरूपयोग के अलावा और कुछ नहीं है। धारा 498-ए के तहत, पुलिस को बिना किसी वारंट के आरोपी को गिरफ्तार करने की शक्ति है। आमतौर पर ऐसे मामलों में जमानत नहीं दी जाती है। ऐसे कई मामले सामने आए हैं जिनमें दहेज विरोधी कानून प्रावधानों के तहत परिवारों को अनुचित रूप से परेशान किया गया था। अदालतों ने दंपतियों के बीच समझौता कराने के लिए हर जिले में परिवार कल्याण समिति के गठन की सलाह दी थी। पर ऐसा हुआ नहीं। शादी से जुड़े लगभग हर मामले को दहेज उत्पीड़न का मामला बताकर बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जा रहा है। यदि यह दुरूपयोग जारी रहा, तो विवाह की संस्था ही समाप्त हो सकती है।

(शेष अगले कॉलम में)

वीर बाल दिवस

राजकुमार जैन

स्वतंत्र विचारक और लेखक हैं

मौत असानू प्यारी लागे

डॉ.मोहन यादव की सरकार ने शहीद वीर बालकों के इतिहास को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने का अभिनंदन, अनुकरणीय और सराहनीय फैसला लिया

बेंजामिन फ्रैंकलिन लिखते हैं यदि आप चाहते हैं कि आपकी मृत्यु उपरान्त भी लोग आपको याद रखें और ना भूले, तो आप ऐसा कार्य करें कि लोग उसके बारे में लिखें या ऐसा लिखिए कि लोग पढ़े। स्वनाम धन्य दशम गुरु गोविंद सिंह जी के चारों साहबजादों में से अजीत सिंह 17 वर्ष, जुझार सिंह 15 साल ने वर्ष 1704 में 21, 22 और 23 दिसंबर को चमकौर की जंग में मात्र 40 सिख सैनिक साहबजादे अजीत सिंह और जुझार सिंह के नेतृत्व में 10 लाख सैनिकों के मुगल बल पर टूटे और संख्या में कई गुना मुगल सेना को गाजर-मूली की तरह काटते हुए शहीद होकर गुरु गोविंद सिंह जी की कहावत सवा लाख से एक लड़ाऊ, तब गुरु गोविंद नाम कहाऊ को चरितार्थ किया। यह तो थे बड़े बेटे, पर क्या कहेंगे उन वीरों के बारे में साहबजादे जोरावर सिंह 9 साल और फतह सिंह 7 साल की बेमिसाल बहादुरी के बारे में, जिन्होंने हंसते-हंसते पंथ की खातिर, देश की खातिर मृत्यु को हंसते-हंसते गले लगाया।

क्या है सरहिंद का वाक्य, असल में सरहिंद फतहगढ़ साहब का पुराना नाम है। मुगल काल में सरहिंद पंजाब का एक सुबह था माता जीतो की कोख से माघ सुदी 3 संवत 1753 को और फागुन सुदी 7 संवत् 1755 को जोरावर सिंह और फतेह सिंह जी का जन्म हुआ था। सिख संगत आज उन अमर शहीदों को बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह के नाम से याद करती है। सिख समाज की विभिन्न अवसरों पर इन वीर सपूतों की शहदी मनाती है पर अन्य लोगों को भी उनकी कुर्बानी बाबत जानना चाहिए।

आनंदपुर साहिब में मुगल सेना ने भारी सैन्य बल के साथ चढ़ाई कर दी। उसे वक्त गुरु गोविंद सिंह जी सपरिवार यानी मां गुजरी, पत्नी माता सुंदरी जी, माता साहिब कौर जी और चारों साहबजादे और लगभग 400 सिखों के साथ आनंदपुर किले में थे। अंत्योगत्वा यह तय हुआ कि गुरु महाराज अपने साथियों के साथ किला खाली कर कब्जा मुगल सैनिकों को सौंप दें, उन्हें सुरक्षित निकल जाने दिया जाएगा। पर जैसे ही गुरु साहिब ने किला छोड़कर रोपण की और रवानगी डाली, मुगल सेना ने वादा खिलाफी कर हमला बोल दिया और 472 सिख सैनिकों ने 10 या 5 के जत्थे में सेना को रोकने का प्रयास करते हुए आगे बढ़े और सिरसा नदी तक पहुंच गए। वहां से बाबा जुझार सिंह, बाबा अजीत सिंह और गुरु साहब लगभग 40 सिंहों सहित चमकौर तरफ चले गए। माता सुंदरी, माता साहिब कौर जी को भाई मनी सिंह दिल्ली तरफ ले गए पर रात के अंधेरे में माता गुजरी (दशम गुरु साहिब की मां) और बाबा जोरावर सिंह, बाबा फतेह सिंह गुरु साहिब से बिछड़ गए और सिरसा नदी के साथ चलते.चलते डेरा चक नाम के गांव में आ गए और एक भिष्ती की झोपड़ी में रात में रुके। वहां से गुरु साहिब का रसोइया गंगू ब्राह्मण अपने गांव सहेड़ी ले गया। गंगू के मन में मां के पास का स्वर्ण देखकर लालच आ गया और स्वर्ण थैली चुराकर नजदीकी थाने में खबर कर दी जहां से उन्हें गिरफ्तार कर सरहिंद के सूबेदार वजीर खान के पास भेज दिया।

सत्ता के नशे में चूर धर्मांध वजीर खान ने तत्काल अत्याचार प्रारंभ कर दिए। दिसंबर की रात में माता गुजरी और दोनों साहबजादों को छत पर एक खुली बारादरी (बुर्ज) में बिठाया, न बिस्तर दिए न कंबल। वाह शेर की मां और 7 और 9 साल के शेर, हाड़ तक कपा देने वाली हवा में न उफ की, न वजीर खान के नौकरों के सामने ठंड से बचाने गुहार की। उस अदम्य साहस से पहरेदारों का दिल पसीज गया, पर निष्ठुर जानवर वजीर खान के डर से उन्हें कोई सहायता नहीं दी। धन, धन माता गुजरी तूने ऐसे ही शेर नहीं जना। अब वजीर खान ने दोनों साहबजादों को मुसलमान बनाने डराया धमकाया, प्रलोभित किया पर बाबा जोरावर सिंह का एक ही जवाब रहा।

मौत असानू प्यारी लागे
धर्म त्यागना काती बग्गे

तब उन्हें जिंदा दीवाल में चिनवाने का आदेश दिया गया और दोनों भाइयों को बगल में खड़ा करके मिस्त्री ने चिनाई शुरू की। बाबा फतेह सिंह छोटे थे इस कारण जैसे ही उनकी गर्दन तक दीवार आई, बाबा जोरावर सिंह की आंखों में आंसू आए, तो बाबा फतेह सिंह जी कहते हैं क्या वीर जी मौत से डर गए हो और बाबा जोरावर सिंह का जवाब था ना वीर में मौत से नहीं डरा, मुझे दुख है में बड़ा था इस कारण पहले कुर्बानी मेरी होनी थी पर तूने मेरा हक मार दिया। बोल.....

वाहगुरु जी की खालसा
वाह गुरु जी की फतेह
जो बोले सो निहाल
सत श्री अकाल

और मातृभूमि पर प्राण न्यौछावर कर दिए। उधर माता गुजरी ने अपने प्राणों से प्यारे लालों की शहीदी का समाचार सुना तो उन्होंने भी प्राण त्याग दिए।

सोचकर रोम-रोम खड़े हो जाते हैं 7 और 9 वर्ष की उम्र में इतना साहस कहां से आया ? जब ये खबर गुरू साहब के पास पहुंची तब उन्होंने फारसी में एक पत्र औरंगजेब को जो दक्षिण में मराठों से युद्ध में लिप्त था भेजा, जो जफरनामे के नाम से मशहूर है। उसके कुछ शेर यहां उल्लेख किए जा रहे हैं जो उनकी निर्भीकता, कर्तव्य परायणता और देश भक्ति की सोच का प्रमाण है।

बनाम खुदाबंद तेगो तवर
खुदाबंद तीरो सनानो समर
(तलवार, कटार, तीर, फल और काल के स्वामी का नाम लेकर।)
खुदाबंद मर्दान जंग आजमा
खुदा अस्पान पादर हवा
(कुशल योद्धाओं के और हवा तेज घोड़ों के स्वामी का नाम लेकर।)
हुमा को तिरा पादशही बदाद
व मावदौलते बेपनाही बदाद
(उसका जिसने तुझ बादशहत और हमें धर्म रक्षा का गौरव दिया।)
तिरा तरको राजी व मकरो रिया
मिरा चारासाजी बेसिद को सिफा
(तुझे दिया मकर, फरेब, धोखा, मुझे दिया स्वच्छ ह्दय)
न जेबा तिरा नाम औरंगजेब
ज औरंगजेब निहायद फरेब
(औरंगजेब नाम तेरे जैसे फरेबी को शोभित नहीं होता है।)
न तस्बीहत अज सजोरिश्ता वेश
कजा दानामाजी बजी दाम खेश
(तेरे हाथ की तस्वीह (माला) से कोई लाभ क्योंकि उससे तुम मकर का जाल बुनते हो।)
मन अकनन बाफजाल पुरूष अकाल
कनक व अहाव आह नचनान बरश काल
की हरगिज अजान चार दिवारे शरम
निशने नमानद बर्री पाक बरम
(मैं, अब अकाल पुरूष से तलवार की धार की ऐसी वर्षा करूंगा कि इस पवित्र भूमि पर उस अपवित्र चार दीवारी (सरहिंद) का नाम निशान नहीं रहेगा।)
जकरा दक्कन तिशना काम आमदी,ज मेवाड़ हम तलख जाम आमदी
(महाराष्ट्र से तू प्यासा वापस आया है मेवाड़ से भी तू कड़वा घूंट भर कर आया है)
चना आतशे जेर न आलत न हम,ज पंजाब आवत न खुर्दन दहम
(मैं, इस प्रकार तुम्हारे पैरों के नीचे आग रखूंगा कि पंजाब में तुझ पानी नहीं मिलेगा।)

यह जफरनामा 111 शेर का है। मैंने कुछ अंश लिखकर आज के पाठकों को गुरू साहब की निर्भीकता बताने का छोटा सा प्रयास किया है। ये उस औरंगजेब को गुरू साहब का संबोधन है जिसने शिवाजी के पुत्र संभा जी की आंखें उससे नजर मिलाने के जुर्म में निकलवा दी थी और वर्तमान में भी भारत के राजनीतिक मुखिया किसी भी दल के हों अपने क्षत्रपों के साथ क्या बर्ताव करते हैं, आप सभी वाकिफदार हैं।

मौजूदा सरकार अपने राजनीतिक कारणों से 14 नवंबर के बाल दिवस को गलत ठहरा रही है। मात्र इस कारण कि वह नेहरू जी के जन्म दिवस पर मनाया जाता है। पर न तो वह नेहरू के वंषज की स्मृति में है और न ही किसी विशेष वर्ग के बच्चों के लिए है। थोड़ा सन 50 व 60 के दशक में जाइए, जब शिक्षा का प्रतिशत 10 था, कुपोषण, बाल श्रमिक का बाहुल्य, शिशु मृत्यु दर बहुत ज्यादा था, उस समय बचपन बचाने, यौन उत्पीड़न, निरक्षरता, बाल श्रमिक का शोषण रोकने की जागरूकता हेतु यह आंदोलन जैसा था। इसके बहुत उद्देश्य पूरे भी हो गए हैं। इस कारण इस पर जोर न दें तो कोई बात नहीं। पर वह बाल दिवस भी उपहास का विषय न होना चाहिए।

मोदी सरकार का यह निर्णय सराहनीय है कि वीर बाल दिवस मनाने का, मेरा विनम्र मत में राष्ट्रीय स्तर पर पूरे देश में गुरु साहब के सिंहो के बलिदान की दास्तान का प्रचार प्रसार हो, झांकियां लगे, स्कूल में प्रतिज्ञा हो देश पर बलिदान की, बाबा जोरावर सिंह और फतेह सिंह के अनुसरण की, तब वीर बाल दिवस का उद्देश्य पूरा होगा और मध्य प्रदेश सरकार के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने स्कूली पाठ्यक्रम में वीर बालकों का इतिहास जोड़ने का जो निर्णय लिया वह सराहनीय, अनुकरणीय अभिनंदनीय कदम है और बंदा बहादुर जैसे भूले बिसरे हीरों, जिसने वजीर खान की ईंट से ईंट बजाकर बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह की हत्या का बदला लिया, को भी स्मरण करना होगा। क्योंकि बहादुर शाह प्रथम (औरंगजेब का बेटा) ने उस बंदा बहादुर पर अत्याचार किए, वे इस लेख की अगली श्रृंखला में बताए जाएंगे। पर मोदी सरकार से अनुरोध है कि दिनांक 9 जून 1716 को बंदा बैरागी बलिदान दिवस भी मनाया जाए।

डॉ.महेन्द्र अग्रवाल

लेखक स्तंभकार हैं।

दुष्यन्त ले के आया ये लश्कर

नई कविता की जटिलता दुरूहता और एकरसता की स्थिति से उपजे मोहभंग के बाद ग़ज़ल जैसी चुकी चुकाई सामंती विधा में लौटने वाले दुष्यन्त जीवन के अंतिम क्षणों में यह अनुमान न लगा सके कि वह ग़ज़ल साहित्य में एक नई काव्यधारा का प्रवर्तन कर रहे हैं और उनके पीछे एक लश्कर चलने वाला हैं। दुष्यन्त नई कविता के पारंगत कवि थे। एक ग़ज़लकार के रूप में सामने आने से पहले ग़ज़ल पर उनका रियाज़ पूरा हो चुका था। उनकी स्वीकारोक्ति मैंने चोरी छुपे पहले भी कई बार इस विधा को आज़माया है यह विश्वास दिलाने के लिये पर्याप्त है। दुष्यन्त के बारे में यह धारणा ग़लत है कि साये में धूप की समस्त ग़ज़लें उन्होंने इस संग्रह के प्रकाशन समय के पूर्व एक वर्ष के अंतराल में लिखी हैं। उनकी ग़ज़लों में मतले से मक्ते की बनावट कसावट और मिसरों में बहर का एक सा तनाव उनके पूर्व अभ्यास की देन है। यही कारण है कि उनकी ग़ज़लों से एक उत्कृष्ट व मंजे हुए शायर की छवि स्फुरित होती है।

उनकी ग़ज़लें अपने परिवेश की जीवंत प्रस्तुति हैं और परिवेश के विरूद्ध संघर्षरत व्यक्ति की प्रतिक्रियायें भी उनकी सबसे बड़ी विशेषता है उनकी मौलिकता जो ग़ज़लों में कथ्य और भाषा के स्तर पर दिखाई देती है। साधारण शब्दों में असाधारण भावों को सहजता और सरलता से व्यक्त करना उनकी ग़ज़लों का प्रधान गुण है। यथा-

हमको पता नहीं था हमें अब पता चला
इस मुल्क में हमारी हुकूमत नहीं रही

जनता के लिये जनता के द्वारा जनता पर शासन वाले कथित लोकतंत्र की विसंगतियों विडम्बनाओं विद्रूपताओं को उन्होंने अपनी ग़ज़लों में बड़े सलीके से उघाड़ते हुए इसे नये दौर का सबसे बड़ा झूठ कहा तथा चुनावी मौसम में बरसाती मेढ़कों की तरह टर्राने वाले नेताओं को ग़ज़ल की शालीनता सांकेतिकता के साथ कसकर जूता मारने की इच्छा शक्ति का परिचय दिया।

तेरी ज़बान है झूठी ज़म्हूरियत की तरह
तू एक ज़लील सी गाली से बेहतरीन नहीं

वस्तुतः इस तरह के अनूठे व दुर्लभ शेर उनकी सुविकसित राजनीतिक चेतना के प्रतिफल हैं जो एक ओर उन्हें परिवेश को समझने के लिये स्पष्ट और ईमानदार दृष्टि देती है जैसे-शासकीय सेवा में रहते हुए भी आपातकाल में जयप्रकाश नारायण के लिये कहा गया यह शेर-

एक बूढ़ा आदमी है मुल्क में या यों कहो
इस अन्धेरी कोठरी में एक रोशनदान है

तो दूसरी ओर इसी दृष्टि को माध्यम बनाकर वह उन्हें आज के आम आदमी से पूरी तरह जोड़ती भी है-

मुझमें रहते हैं करोड़ों लोग चुप कैसे रहूँ
हर ग़ज़ल अब सल्तनत के नाम एक बयान है

इसी स्पष्ट दृष्टि के कारण दुष्यन्त शासकीय सेवा में होते हुए भी न तो व्यवस्था के सम्मुख नतमस्तक हुए और न मौन रह सके-

ये जुबां हमसे सी नहीं जाती
ज़िन्दगी है कि जी नहीं जाती

विकास के थोथे नारों और प्रगति के झूठे आंकड़ों पर उन्होंने कभी विश्वास नहीं किया क्योंकि वह वास्तविकताओं से

पूर्णतः परिचित क्योंकि वह स्वयं इस व्यवस्था से जुड़े थे। नेताओं के भाषणों और सरकारी फाइलों से अलग आम आदमी की ख़स्ताहाल ज़िन्दगी को उन्होंने बड़े करीब से देखा था। किसी हद तक भोगा भी था।उनके बहुतेरे शेर इस कथन के साक्षी हैं-

कहीं पे धूप की चादर बिछा के बैठ गए
कहीं पे शाम सिरहाने लगा के बैठ गए
जले जो रेत में तलुए तो हमने यह देखा
बहुत से लोग वहीं छटपटा के बैठ गए

यदि यह कहा जाये कि भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी इस पूरी व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठाने की ख्वाहिश ने इन ग़ज़लों को साकार किया है तो ग़लत न होगा।उन्होंने अपनी ग़ज़लों का दोहरा इस्तेमाल किया।कविता को काव्य रूप के अतिरिक्त सामाजिक परिवर्तन के सशक्त साधन रूप में प्रस्तुत करने की प्रेरणा दी। दुष्यन्त ने पहली बार ग़ज़ल को आदमकद बनाया।युगीन परिस्थितियों और परिवेश से इतनी घनिष्ठता इस विधा की पहले कभी नहीं रही।उनकी ग़ज़लों में इस दौर के सामाजिक राजनीतिक मूल्यों तथा इन मूल्यों में हुए परिवर्तनों को सरलता से देखा-समझा जा सकता है-

जरा सा तौर तरीकों में हेर फेर करो
तुम्हारे हाथ में कॉलर हो आस्तीन नहीं।

दुष्यन्त परवर्ती ग़ज़लकारों के प्रेरणा स्त्रोत इसीलिए बन सके क्योंकि उनके यहां युगानुरूप अनुभूति की ईमानदारी है।उनकी ग़ज़लों में अपनी मिट्टी की गंध है और चारों ओर व्याप्त प्रदूषित परिवेश का प्रभाव भी। एक अव्यवस्थित व्यवस्था के प्रति असंतोष आक्रोश और खीझ उनके अंदर सदैव बनी रही शायद ग्लानि भी यह जानकर कि वह इसी का एक अंग है। वह ऊपर से नीचे तक समूची व्यवस्था से यह प्रश्न करते हैं-

कैसी मशालें ले के चले तीरगी में आप
जो रोशनी थी वो भी सलामत नहीं रही

दुष्यन्त अपने शेरां में व्यवस्था परिवर्तन के लिये जब क्रान्ति का आव्हान करते हैं तब उसमें भी उनकी राष्ट्रीयता की गहरी भावना संलग्न होती है। ऐसी भावना जो सदैव आशावादी है।

एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तो
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है
कैसे आकाश में सूराख़ नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो
दस्तकों का अब किवाड़ों पर असर होगा ज़रूर
हर हथेली खून से तर और ज्यादा बेक़रार।

डॉ.बी.एन.सिंह के शब्दों में दुष्यन्त की नई ग़ज़ल प्रजातंत्र के गंगाजल से नहाकर आई है। इसकी कुंआरी वेदना (शहीदी तकलीफ़) प्रजातंत्र की अंतःपीड़ा है।कवि ने अत्यधिक पैनी लेखनी से प्रजातंत्र के दर्द को उकेरा है।'साये में धूप एक छोटा सा ग़ज़ल-स्तबक है जिसका प्रत्येक रक्त-पुष्प अनुभूति की नोंक में पिरोकर अलंकृत किया गया है। प्रत्येक शेर बुद्धि की तीक्ष्ण छेनी से राष्ट्र के कटु यर्थाथ पर प्रहार करता है। इसमें राष्ट्रीय चेतना की आणविक शक्ति है जो सहृदय की रगों में ऊर्जा संचालित करती है। राष्ट्र की आत्मा की सान्द्र पीर की कसक के कारण ही राष्ट्र के अश्रुजल के गंगा कलश को अतिशीघ्र उच्चतम शिखर पर प्रतिष्ठित कर दिया है। कवि दुष्यन्त ने माटी की पीर को ऐसी ईमानदारी से अभिव्यक्ति दी है कि वह बुद्धिवादियों के सुषुप्त भावना लोक को झकझोर देती है।

दुष्यन्त ने साहित्य समीक्षकों को न सिर्फ ग़ज़ल की परम्परागत धारणाओं को छोड़कर नए सिरे से सोचने के लिये मजबूर किया अपितु अपनी ग़ज़लों पर पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर मूल्यांकन के लिये बाध्य भी किया।उनसे पहले कोई अन्य ग़ज़लकार यह महती उपलब्धि हासिल न कर सका और न अन्य किसी ग़ज़लकार ने अपने समकालीन व परवर्ती ग़ज़लकारों को अपनी भाव-धारा में बहने के लिये इस सीमा तक मजबूर किया। उन्होंने सच ही कहा था-

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं है
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलना चाहिए।

मुख्यमंत्री उद्यम एवं स्वरोजगार योजना में बैतूल प्रदेश में प्रथम

- सिविल सेवा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 23 विद्यार्थियों को 4.10 लाख रूपए की राशि का किया वितरण

बैतूल। राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं से जिले में हितग्राही लाभान्वित हुए हैं। पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के सहायक संचालक ने बताया कि विभाग द्वारा मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना, मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना, राज्य सेवा परीक्षा प्रोत्साहन राशि योजना, राज्य से बाहर अध्ययनरत छात्रों को छात्रवृत्ति योजना तथा विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति योजना संचालित है। विगत एक वर्ष में पिछड़ा वर्ग पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना में जिले के 13004 विद्यार्थियों को 10 करोड़ 73 लाख का वितरण कर बैतूल जिले ने प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इसी प्रकार मुख्यमंत्री उद्यम योजना में 41 हितग्राहियों को, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना में 201 हितग्राहियों को तथा विमुक्त घुमक्कड़ अर्ध घुमक्कड़ विभाग ने 9 हितग्राही को लाभान्वित कर बैतूल ने प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सिविल सेवा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 23 विद्यार्थियों को 4.10 लाख की राशि का वितरण किया गया। पिछड़ा वर्ग छात्रावास योजना के तहत 100 सीटर बालक छात्रावास तथा 50 सीटर कन्या छात्रावास में शत-प्रतिशत प्रवेश हुए। इसके अलावा सीएम हेल्पलाइन में दर्ज लंबित शिकायतों का विभाग द्वारा शत प्रतिशत संतुष्टि पूर्ण निराकरण कर बैतूल जिला संपूर्ण वर्ष भर प्रदेश में प्रथम स्थान पर रहा है।

इंडियाज गॉट टैलेंट फेम इशिता विश्वकर्मा आएंगी बैतूल

म्यूजिकल नाइट में बिखेरेंगी अपने स्वर का जादू

बैतूल। कंगना रणौत की आने वाली फिल्म में गाना गाने वाली 'इंडियाज गॉट टैलेंट' फेम इशिता विश्वकर्मा 11 जनवरी को लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में आयोजित म्यूजिकल नाइट में अपने स्वर का जादू बिखेरेंगी। सामाजिक संस्था संतुलन के अध्यक्ष सजल प्रशांत गर्ग ने बताया कि म्यूजिकल नाइट को लेकर तैयारियां जारी हैं। इस कार्यक्रम में देश के प्रसिद्ध गायक और ढोलक वादक आ रहे हैं, उनमें इंडियाज गॉट टैलेंट फेम इशिता विश्वकर्मा भी शामिल हैं। इशिता बहुत अच्छी गायिका हैं और देश में उनके फैन की संख्या भी लाखों में है। आयोजन समिति के सदस्य नरेंद्र ठाकुर ने बताया कि इशिता पहली बार सारेगामापा लिटिल चैम्स में नजर आईं, जहां उन्होंने अपनी अद्भुत गायकी से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद, इंडियाज गॉट टैलेंट में उन्होंने अपनी प्रतिभा को एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया। शो में उनकी हर परफॉर्मेंस दर्शकों और जजों को भावविभोर कर देती थी। इशिता के हुनर से प्रभावित होकर, अभिनेत्री कंगना रनौत ने उन्हें अपनी आगामी फिल्म में गाने का प्रस्ताव दिया। इस फिल्म के गाने को मनोज मुंतशिर ने लिखा है, जो इशिता की आवाज़ को इस गाने के लिए एकदम उपयुक्त मानते हैं। इस मौके को पाकर इशिता बेहद खुश हैं और इसे अपने करियर का सबसे बड़ा ब्रेक मानती हैं।

युवक ने खाया जहर, उपचार के दौरान मौत

बैतूल। एक युवक ने जहरीला पदार्थ खा लिया, जिसकी उपचार के दौरान शनिवार रात मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की विवेचना शुरू कर दी है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार भैंसदेही तहसील में कार्यरत प्यून मुन्नालाल दहीकर के मंझले बेटे दुर्गादास ने जहरीला पदार्थ खा लिया। वह परिवार के साथ रहता था और गांव में खेती करने के साथ शहर में मजदूरी का काम भी करता था। शनिवार सुबह करीब 10 बजे दुर्गादास ने अपने घर में ही जहरीला पदार्थ खा लिया। जब उसे उल्टियां होने लगी तो परिजनों ने भैंसदेही सीएचसी में भर्ती कराया। हालत नाजुक होने की वजह से जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। शनिवार रात को इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की विवेचना शुरू कर दी है।

सारणी पुलिस ने दो स्थायी वारंटी गिरफ्तार

बैतूल। पुलिस द्वारा फरार वारंटियों की गिरफ्तारी के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में सारणी पुलिस ने दो स्थायी वारंटियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार गुड्डू पिता श्याम कठौले (32) और गोविंद पिता महेन्द्र यादव (35) को गिरफ्तारी के बाद न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है।

वाहन चालक नहीं करते यातायात नियमों का पालन, इसलिए हर साल बढ़ रहे सड़क हादसे

चार साल : 3405 सड़क हादसे, 1245 की मौत, 3947 को मिला जिंदगी भर का दर्द

संजय द्विवेदी, बैतूल। जिले में हर साल सड़क हादसों की संख्या बढ़ते ही जा रही है। वर्ष 2024 में ही 1 जनवरी से नवंबर यानि 11 महीने में करीब 837 सडक हादसे हुए है, जिसमें 308 लोगों की जान चली गई, वहीं 1106 घायल हुए है। हालांकि पिछले वर्ष 2023 की तुलना में इस वर्ष सडक हादसे जरूर कम हुए है, लेकिन अफसोस सडक हादसे में जान से हाथ धोने वालों की संख्या कम नहीं हुई। वर्ष 2023 में सड़क हादसों में 286 लोगों की मौत हुई थी, जबकि वर्ष 2024 में 308 लोगों ने सड़क हादसे में दम तोड़ दिया। यह सड़क हादसे ज्यादातर शराब के नशे में वाहन चलाने से या रात में नींद आने की स्थिति में होते है। इसके अलावा सड़क हादसों में खराब सड़कें, वाहनों की तेज रफ्तार, लापरवाही और बिना हेलमेट वाहन चलाना भी सड़क हादसों की मुख्य वजह रही है। इन सड़क हादसों को रोकने के लिए पुलिस और यातायात विभाग लगातार शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में यातायात जागरूकता कार्यक्रम

चलाकर लोगों को समझाइश भी देती है, लेकिन वाहन चालक नहीं मानते है। परिणामस्वरूप सडक हादसे बढ़ रहे और लोग अपनों को खोकर जिंदगी भर का दर्द सह रहे है।

चार साल में 3405 सड़क हादसे

यातायात विभाग से प्राप्त जानकारी के मुताबिक बीते चार साल यानि 2021 से लेकर 2024 तक जिले में कुल 3405 सडक हादसे हुए है, जिसमें 1245 लोगों की मृत्यु हुई है, वहीं 3947 लोग घायल हुए है। चार साल के आंकड़ों पर नजर डाली जाये तो वर्ष 2021 में सबसे कम सड़क हादसे हुए और इनमें मृतकों और घायलों की संख्या भी कम ही रही है, जबकि सबसे ज्यादा सड़क हादसे 1 जनवरी से 31 दिसंबर 2022 में दर्ज किये गये। वर्ष 2022 में 962 सडक हादसे हुए, जिसमें 378 लोगों की मौत हो गई और करीब 900 लोग घायल हुए।

हाईवे पर तेज रफ्तार और ग्रामीण सड़कें बनी कारण: जिले से गुजरने वाले भोपाल-नागपुर नेशनल हाईवे और ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों पर ज्यादा सड़क हादसे होते है। जानकार बताते है कि नेशनल हाईवे बनने के बाद सड़क हादसों में भी इजाफा हुआ है। इसकी वजह यह है कि नेशनल हाइवे पर लोग वाहन चलाते समय नियमों का पालन नहीं करते है। वाहनों की रफ्तार निर्धारित से ज्यादा होती है। इससे वाहन दुर्घटना जैसी स्थिति बनती है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों की सड़क पर हादसों का कारण सड़कों का खराब होना, बिना हेलमेट और अंधे मोड पर तेज गति से वाहन चलाना जैसे कई कारण सामने आते है।

सड़क हादसे रोकने के लिये पुलिस और यातायात पुलिस द्वारा किये गये उपाय

(1) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में यातायात जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन।
(2) सोशल मीडिया, फ्लेक्स बैनर एंव पेम्पलेट वितरण कर यातायात नियमों की जानकारी।
(3) सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में सड़क डिजाइन, रोड मार्किंग, रोड साइनेज लगाना।
(4) एक्सीडेंट जोन एरिया को चिन्हित कर सडक निर्माण एजेंसी से शॉर्ट टर्म परिशोधन कार्य कराना।
(5) व्यावसायिक वाहनों पर रेडियम रिफ्लेक्टर लगवाना और नियमों के उल्लंघन पर चालानी कार्रवाही।
(6) नेशनल हाईवे एवं स्टेट हाईवे पर स्थित जंक्शन पॉइंट पर एप्रोच रोड से आने वाले वाहनों को रोककर दाहिने-बाएं देखकर मार्ग कास करने की समझाइश।

जानिए ... किस वर्ष में कितने सड़क हादसे, घायल और मौत

वर्ष	हादसे	घायल	मौत
2021	689	833	273
2022	962	900	378
2023	918	1108	286
2024	837	1106	308

इनका कहना है -

सड़क हादसों को कम करने के लिए समय-समय पर जागरूकता शिविर और पेम्पलेट, बैनर, पोस्टर सहित अन्य माध्यमों से वाहन चालकों को जागरूक करते है। नियमों का उल्लंघन करने वालों पर चालानी कार्यवाही भी की जाती है, लेकिन इसके बाद भी वाहन चलाते समय लोग नियमों की अनदेखी और लापरवाही करते है। जिससे सड़क हादसे होते है।
- गजेन्द्र कैन, प्रभारी, यातायात पुलिस, बैतूल

अन्नपूर्णा- शुक्ला कॉलोनी में श्रीमद् भागवत महापुराण कथा आचार्य रविराज शास्त्री के मुखारबिंद से हो रही है

- 6 वर्षो से हो रहा है आयोजन, भागवत श्रवण करने पधार रहे है अतिथिगण

धार। अन्नपूर्णा- शुक्ला कॉलोनी में छठवें वर्ष श्रीमद् भागवत महापुराण में भागवत आचार्य श्री रविराज जी शास्त्री के मुखारविंद से भगवान नारायण हरि श्री विष्णुजी के सभी अवतारों का वर्णन किया जा रहा है । सुंदर प्रसंगों के साथ यह निचोड़ निकलता है मनुष्य जीवन को संवारने के लिए ईश्वर की आराधना करने और उनकी प्राप्ति हेतु भक्ति करना बहुत आवश्यक है। समिति के मानसिंह ठाकुर, एडवोकेट आनंदीलाल व्यास, प्रकाश चंद्र चावड़ा, अंकित चावडा, मोहन राठौड़, श्याम हरोड, राजेश सिसोदिया, राधेश्याम पाटीदार आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। प्रतिदिन अतिथियों का आगमन हो रहा है। गणेश मंडल तिरला, समाजसेवी समंदर सिंह पटेल , धार नगर पालिका अध्यक्ष नेहा महेश बोडाने , धार एसडीएम रोशनी पाटीदार, तहसीलदार धार सहित भागवत श्रवण करने पधार रहे है अतिथिगण ।

जिले के सभी 39 मंडलों के बूथ केंद्रों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात कार्यक्रम सुना

विधायक नीना वर्मा ने नगर भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ वार्ड 9 के बूथ क्रमांक 63 पर सुना

धार। भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम के तहत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 29 दिसंबर 11 बजे से मन की बात के 117 वा एपिसोड के तहत जिले के सभी 39 मंडलों के 1879 बुथ केंद्रों पर मन की बात देखा व सुना गया। धार विधायक नीना वर्मा ने नगर के वार्ड क्रमांक 9 के बूथ क्रमांक 63 पर आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित होकर मन की बात कार्यक्रम को नगर मंडल अध्यक्ष विशाल निगम पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष ममता जोशी, पूर्व नगर पालिका उपाध्यक्ष कालीचरण सोनवानिया, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा,बूथ अध्यक्ष राजेश कुमावत के साथ सामूहिक रूप से सुना। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात कार्यकम के 117 वें एपिसोड को संबोधित किया। जिसमे पीएम मोदी ने संविधान, महाकुंभ और बस्तर ,

ओलंपिक से लेकर तमिल भाषा तक कई विषयों पर चर्चा की तथा प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय संस्कृति और विरासत के संरक्षण पर जोर दिया। उन्होंने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने और सही पोषण के महत्व पर बात की गई। पीएम मोदी ने लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और संतुलित आहार के लाभों के बारे में जानकारी दी। पीएम ने विशेष रूप से बच्चों के पोषण पर ध्यान केंद्रित किया।

इस अवसर पर मनोज जैन शैलेंद्र चौरसिया, दीपेंद्र सिंह ठाकुर, नवीन भंवर, सौरभ त्रिपाठी संजय मकवाना संगीत कुमावत, सुनीता कुमावत, निर्मला शर्मा, प्रदीप कुमावत, सुरेंद्र ठाकुर, अंकित जैन, रिंकू मेरवानी, मुकेश खटोड़ सहित बूथ कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

31 को जिले के समस्त नगरीय निकायों और जनपदों में आयोजित होगा जनसंवाद कार्यक्रम

नागरिकों की आकांक्षाओं, विचारों और प्राथमिकताओं को विजन डॉक्यूमेंट में किया जाएगा शामिल

बैतूल। च्विकसित मध्यप्रदेश-2047 विजन डॉक्यूमेंट तैयार करने में नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित की जायेगी। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के सर्वांगीण और समावेशी विकास की दिशा में अग्रसर होने एवं वर्ष-2047 तक विकसित भारत के साथ-साथ मध्यप्रदेश को भी विकसित राज्य बनाने के उद्देश्य से च्विकसित मध्यप्रदेश-2047 विजन डॉक्यूमेंट तैयार किया जा रहा है। इसी के तहत 31 दिसंबर को जिले के समस्त नगरीय निकायों और जनपदों में जन संवाद कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जिसके माध्यम से नागरिकों की आकांक्षाओं, विचारों और प्राथमिकताओं को विजन डॉक्यूमेंट में सम्मिलित किया जाएगा। जन प्रतिनिधियों, महिलाओं, युवाओं, किसानों, वंचित समुदायों अन्य सभी इस जनसंवाद कार्यक्रम में सहभागी बन विचार मंथन करेंगे और अपने सुझाव देंगे। बैतूल कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने सभी अधिकारियों को जनसंवाद कार्यक्रम का प्रभावी ढंग से आयोजन करने के निर्देश दिए हैं।

कलेक्टर की अध्यक्षता में होगा जनसंवाद कार्यक्रम

विकसित मध्यप्रदेश-2047- विजन डॉक्यूमेंट को तैयार करने में नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु जनसंवाद कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। जनपद और नगरीय निकायों में जन संवाद कार्यक्रम के पश्चात जिला स्तरीय जनसंवाद कार्यक्रम कलेक्टर की अध्यक्षता में आयोजित होगा। जिसमें जनप्रतिनिधियों, महिलाओं, युवाओं, किसानों, वंचित समुदायों, उद्योगों से जुड़े लोगों और अन्य नागरिकों की सहभागिता सुनिश्चित करते नागरिकों को आमंत्रित किया जाएगा।

इस कार्यक्रम का आयोजन सुनिश्चित कर संकलित फीडबैक को 10 जनवरी 2025 तक गूगल लिंक और ईमेल के माध्यम से मध्यप्रदेश राज्य नीति आयोग को भेजा जाएगा। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री द्वारा नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की 9वीं बैठक में विकसित भारत-2047 के विजन को प्राप्त करने के लिए राज्यों और केंद्र के बीच सहयोग और सामूहिक प्रयासों पर विशेष जोर दिया गया।

शौर्य दिवस पर सामाजिक एकता की मिसाल बनेगा ग्राम एनस

बैतूल। मुलताई तहसील के ग्राम एनस में 1 जनवरी 2025 को भीमा कोरेगांव के शहीदों और सामाजिक संघर्षशील वीरों को श्रद्धांजलि देने के लिए भव्य शौर्य दिवस का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम सामाजिक एकता और शौर्य का प्रतीक बनेगा। आयोजन समिति के तुलाराम चौकीकर ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 9 बजे पूज्य भंते दीपांकर जी द्वारा ध्वजारोहण और वंदना से होगी। इसके बाद सुबह 9:30 बजे शहीदों और भीमा कोरेगांव के वीर शहीदों को भूतपूर्व सैनिकों द्वारा सलामी दी जाएगी। सुबह 10 बजे से मान्यवर जय भीम मंडल मुलताई द्वारा संगीतमय कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा। 11.30 बजे मुख्य अतिथियों का प्रबोधन कार्यक्रम होगा। इस दौरान मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त न्यायाधीश बीके जाटव, बुद्धिष्ठ इंटरनेशनल के प्रदेश अध्यक्ष मिलिंद बौद्ध, विशेष अतिथि भीम सेना मप्र के प्रदेश प्रभारी पंकज अतुलकर, भीम आर्मी के जिला महासचिव राकेश महाले अपने विचार साझा करेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता शौर्य दिवस समारोह समिति एनस के अध्यक्ष नरेश चौकीकर करेंगे, जबकि संचालन आयुष्मती जसवंती चौकीकर करेंगी। शौर्य दिवस समारोह समिति ने बताया कि जो लोग भीमा कोरेगांव (पुणे, महाराष्ट्र) नहीं जा सकते, वे ग्राम एनस स्थित शौर्य स्मारक पर आकर श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

दूध गाड़ियों की तर्ज पर, हर सुबह आ रही है अवैध शराब की गाड़ियां...?

नर्मदापुरम। काले कांच की चार पहिया गाड़ियों सुबह दूध की गाड़ियों के समय नगर में आ रही है। ये चार पहिया गाड़ियां पीडब्ल्यूडी कालोनी स्थित बरगद पेड़ के आजू-बाजू में खड़ी होकर दो पहिया वाहनों के आने का बेसब्री से इंतजार करती है कि कब दो पहिया वाहन आएं और उनका काम खत्म हो.. पीडब्ल्यूडी कालोनी वाले इन गाड़ियों की खटर-पटर से नाराज हैं, बताते हैं शिकायत करने पर भी इस मामले में हल नहीं निकल पा रहा, पुलिस सहित आबकारी विभाग का यह कमाई वाला कारोबार है जो शिकवा शिकायत पर होटलों में छापामारी कर अवैध शराब पकड़ता है लेकिन उसके बैच नंबर से तस्दीक नहीं कर पाता कि किस ठेकेदार की अवैध तरीके से शराब मुख्यालय पर आ रही है, किस राजनीतिक का इन अवैध कारोबारियों को संरक्षण है। इस अवैध कारोबार में सत्ता पार्टी का पूरी तरह संरक्षण है। अवैध शराब ही क्यों, नगर में जुआं, सट्टा आईपीएल सभी तो खुले आम चल रहा है जो

आम आदमी को दिखाई दे जाता पर पुलिस और आबकारी विभाग को दिखाई नहीं देता..! इस अवैध कारोबार को लेकर पहली मर्तबा विधायक जी ने 13 अगस्त को आबकारी विभाग को पत्र लिखकर कुछ चिन्हित जगह बताई, लेकिन आबकारी विभाग ने उन जगहों पर कोई कार्रवाई नहीं की जहां खुले आम 14 और 15 अगस्त को जमकर खुले आम शराब बिकी, इससे सीधा समझ आता है कि राजनैतिक, प्रशासनिक और अवैध कारोबारियों तीनों की जबरदस्त सांठ-गांठ है। खानापूर्ति के लिए पत्राचार और दिखावे की छापामारी जारी है। आबकारी के ही जिम्मेदार अधिकारी यह कहना कितना जायज है समझ आता है कि अवैध शराब कारोबार पर अंकुश लगाना सहज नहीं जिसे राजनीतिक संरक्षण, प्रशासन का प्रोटेक्शन विभागीय आमदनी तीनों चीज शामिल हैं।

इसलिए शराब का अवैध कारोबार बंद नहीं हो सकता..! आबकारी और पुलिस की अवैध कारोबार और उनके कारोबारियों को संरक्षण देने से इतनी कमाई हो जाती कि बड़े अधिकारियों की बेगार बुरी नही लगती। होटलों पर छापेमारी इन दोनों विभागों के लिए बोनस है जहां होटल मालिक पर कभी मामला कायम नहीं होता नौकरों पर मामला बनाया जाता है। बस-स्टैंड, सब्जी बाजार, आईटीआई क्षेत्र, बुधवाड़ा डबल फाटक, ओवरब्रिज के नीचे शराब का अवैध कारोबार, जुआं सट्टा चल रहा। शरीफ खुद बचकर इन जगहों से आवा-जाही के लिए मजबूर हैं। ऐसे में मन में एक सवाल उठता है फिर जगह-जगह सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने का औचित्य क्या..? जिसमें जनता की मेहनत के पैसे टेक्स वसूलकर बेफजूल पानी में बहाया जा रहा...!

किराड़ कर्मचारी समिति ने मनाई रजत जयंती

सेवा के 25 वर्षों का जश्न, विशिष्ट प्रतिभाओं का किया सम्मान

बैतूल। किराड़ क्षत्रिय शासकीय कर्मचारी साख सहकारी संस्था मर्यादित बैतूल ने अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने पर आज रविवार, 29 दिसंबर को भव्य रजत जयंती समारोह का आयोजन किया। यह कार्यक्रम नगर के सरले सेलिब्रेशन हॉल में संपन्न हुआ, जिसमें 700 से अधिक स्वजातीय सदस्य, माताएं, बहनें और गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुई। मंच पर मुख्य अतिथि के रूप में मोहन नागर उपाध्यक्ष मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, आमला विधायक योगेश पंडाग्रे, जिला किराड़ समाज संगठन के जिलाध्यक्ष कुलराज नरवरे, कर्मचारी समिति अध्यक्ष फूलचंद महादुले, डॉ. अरविंद चौहान, नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती वर्षा गढ़ेकर, महिला जिला अध्यक्ष किराड़ समाज संगठन बैतूल श्रीमती प्रमिला सिमैया मंचासीन रहे। समिति के 25 वर्षों के कार्यों और उपलब्धियों का वाचन संरक्षक संजय घिडोडे ने किया। मुख्य अतिथि मोहन

नागर ने समाज में जनजागृति, कुरीतियों के उन्मूलन, पौधारोपण और प्लास्टिक मुक्त अभियान जैसे प्रयासों की प्रशंसा की। विधायक हेमंत खंडेलवाल और योगेश पंडाग्रे ने समिति के कार्यों की सराहना करते हुए हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। समारोह में समाजसेवी, देशी नस्ल की गाय पालन करने वाले स्वजातीय गौपालक और विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य करने वालों को स्मृति चिन्ह और पुष्पमाला से सम्मानित किया गया। मंच संचालन दुलीचंद हरोड़े ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन समिति अध्यक्ष फूलचंद महादुले ने किया। कार्यक्रम का समापन भोजन के बाद किया गया।

भोपाल के विज्ञान मेले में नगरीय विकास विभाग का स्टॉल

- प्रदर्शनी में विज्ञान और योजनाओं की दी जा रही है जानकारी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जम्बूरी मैदान में विज्ञान भारती एवं प्रौद्योगिकी परिषद के सहयोग से आयोजित विज्ञान मेले में बच्चों, युवाओं और नागरिकों को देश-दुनिया में विज्ञान के क्षेत्र में हो रही तरक्की की जानकारी आकर्षक मॉडल्स के माध्यम से दी जा रही है। नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी के लिये विज्ञान मेले में स्टॉल लगाया है। स्टॉल में प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी, प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना, मेट्रो, अमृत योजना और स्वच्छ भारत मिशन की जानकारी नागरिकों को दी जा रही है। स्टॉल में विभाग के उपक्रम मध्यप्रदेश अर्बन डेव्हलपमेंट कम्पनी द्वारा स्कॉच अवार्ड से पुरस्कृत धर्मपुरी सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट का मॉडल प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी के अंतर्गत ग्वालियर में निर्मित की गयी कॉलोनी और नगर निगम भोपाल के बॉयो सीएनजी प्लांट सहित भानपुर खंती उद्यान का मॉडल भी प्रदर्शित किया गया है। स्टॉल पर मध्यप्रदेश हाउसिंग बोर्ड की परियोजनाओं की जानकारी भी दी जा रही है। विज्ञान मेले का समापन 30 दिसम्बर को दोपहर बाद होगा। विज्ञान मेले की शुरूआत 27 दिसम्बर को हुई थी।

दिग्विजय सिंह को 10 करोड़ का मानहानि नोटिस

- सुप्रीम कोर्ट के वकील संजय श्रीवास्तव ने कहा- मेरी पेशेवर छवि को नुकसान पहुंचा

भोपाल (नप्र)। सुप्रीम कोर्ट के वकील संजय श्रीवास्तव ने मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह को कानूनी नोटिस भेजा गया है। जिसमें उनसे माफी मांगने और 10 करोड़ रुपए मानहानि पर मुआवजे के तौर पर देने को कहा है। एक महीने के भीतर ऐसा नहीं करने पर दिग्विजय सिंह के खिलाफ आपराधिक और दीवानी मुकदमा कोर्ट में दर्ज कराया जाएगा। दरअसल, दिग्विजय सिंह को यह नोटिस 24 दिसंबर उनकी ओर से पीएम नरेंद्र मोदी को लिखे गए पत्र के मामले में दिया गया है। इसमें कहा गया है कि पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने अपने बयानों और पीएम को लिखे पत्र के जरिए उनके क्लाइंट गोविंद सिंह राजपूत पर व्यक्तिगत और पेशेवर प्रतिष्ठा पर हमला किया है।

'भोपाल-बीना मेमू-पैसेंजर ट्रेन शुरू करें'

अप-डाउनर्स ने रेल प्रबंधक से मांग की; बोले- बंद रास्ता भी खोला जाए

भोपाल (नप्र)। भोपाल से बीना के दौड़ने वाली 2 मेमू ट्रेन का संचालन फिर शुरू करने की मांग की गई है। ये अगले 3 महीने से बंद की गई है। इस वजह से अप-डाउनर्स को परेशानी हो रही है। इसे लेकर उन्होंने रविवार को रेल प्रबंधक को ज्ञापन भी सौंपा। रेलवे अप डाऊनर्स प्रोग्रेसिव वेलफेयर एसोसिएशन संस्था ने रेल प्रबंधक के अलावा सांसद आलोक शर्मा को भी ज्ञापन सौंपा है। उन्होंने बताया कि भोपाल रेलवे स्टेशन से रोजाना लाखों यात्री सफर करते हैं, लेकिन मेमू ट्रेन को बंद कर दिया गया है। जिससे कई यात्रियों को परेशानी हो रही है। उसे फिर से शुरू किया जाना चाहिए। इस मेमू ट्रेन से हर रोज हजारों यात्री सफर करते हैं। इनमें अप-डाउनर्स भी शामिल हैं। यदि यह ट्रेन शुरू नहीं की जाती है तो अगले 3 महीने के लिए भोपाल से बीना तक पैसेंजर ट्रेन का संचालन शुरू हो।

मेट्रो की वजह से रास्ता बंद, परेशानी बढ़ी: मेट्रो के काम की वजह से रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर-6 के बाहर के कई रास्ते भी बंद कर दिए गए हैं। जिससे भी यात्री परेशान हो रहे हैं। वैकल्पिक रास्ता काफी दूर होने से उनकी परेशानी बढ़ गई है। दिव्यांग, बुजुर्ग और बच्चों की दिक्कतें सबसे ज्यादा है। यहां पार्किंग भी बंद की गई है। जिससे ऑटो चालकों का जीवन-यापन भी मुश्किल हो गया है।

नैकहाई शौर्य स्मारक के कार्य समय-सीमा में करें पूर्णः उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल (नप्र)। रीवा के बघेल राजवंश के कार्यकाल में रीवा राज्य में दुश्मनों के आक्रमण का बघेलखण्ड के सपूतों ने मुहतोड़ जवाब दिया। यहाँ के सेनानायकों और वीर सैनिकों की शौर्यगाथा चोरहटा में नैकहाई में लिखी गई। नैकहाई में वीरों की स्मृति में शौर्य स्मारक स्थापित किए गए हैं। इन शौर्य स्मारकों को सुरक्षित और संरक्षित रखने के कार्य का उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने जायजा लिया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सौन्दर्यीकरण के लिए स्वीकृत विभिन्न कार्यों को समय-सीमा में पूरा कराने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि नैकहाई स्मारक को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करें। इसकी बाउन्ड्रीवॉल और मेनगेट का निर्माण कार्य शीघ्र पूरा कराएं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि परिसर में वीर शहीदों की छतरियों के जीर्णोद्धार के लिए एक करोड़ 25 लाख रुपए की राशि मंजूर की गई है। इसके निविदा की कार्यवाही पूरी कर कार्य शीघ्र शुरू कराएं, जिससे 8 फरवरी 2025 को वीरों के बलिदान दिवस पर नैकहाई शौर्य स्मारक का विधिवत उद्घाटन किया जा सके। क्षेत्रीय संचालक औद्योगिक विकास केन्द्र श्री यू.के. तिवारी, कार्यपालन यंत्री औद्योगिक विकास निगम श्री के.के. गर्ग और हाउसिंग बोर्ड के अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री की मन की बात का किया श्रवणः उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निज निवास पर स्थानीय जनों के साथ प्रधानमंत्री के मन की बात'' कार्यक्रम को सुना। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश को विश्वगुरू बनाने और विकसित करने का जो संकल्प लिया है, उसे पूरा करने के लिए हर दिशा में कार्य किए जा रहे हैं। मन की बात'' कार्यक्रम के माध्यम से हम सबको प्रधानमंत्री श्री मोदी का मार्गदर्शन और प्रेरणादायक उद्बोधन मिलता है। इससे जनहित के कार्यों को करने के लिए नई ऊर्जा प्राप्त होती है।

रीवा के प्रतिभाशाली निशानेबाज यश पाण्डेय को किया सम्मानितः उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने रीवा के प्रतिभाशाली निशानेबाज यश पाण्डेय को निज निवास में सम्मानित किया। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि रीवा ही नहीं पूरे विन्ध्य क्षेत्र में कई प्रतिभाशाली खिलाड़ी हुए हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। यश भी राइफल शूटिंग प्रतियोगिता में राष्ट्रीय ही नहीं ओलम्पिक में पदक प्राप्त करें। उप मुख्यमंत्री ने पुष्प-गुच्छ देकर और मिठाई खिलाकर यश को सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि यश पाण्डेय ने भोपाल में आयोजित 67वीं राष्ट्रीय राइफल शूटिंग प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व किया। यश पाण्डेय ने 10 मीटर राइफल में रजत पदक जीतकर मध्यप्रदेश और रीवा का मान बढ़ाया।

भैरव बाबा मंदिर परिसर का धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में किया जाएगा विकासः उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने रीवा जिले की गुढ़ तहसील के समीप प्रसिद्ध भैरव बाबा मंदिर परिसर में चल रहे सौन्दर्यीकरण के कार्य का जायजा लिया। भैरव मंदिर में पूजा-अर्चना करने के बाद शेड निर्माण सहित विभिन्न कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्यों को 31 जनवरी तक पूरा कराएं। भैरव बाबा मंदिर परिसर का धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सोलर पार्क और गुढ़ औद्योगिक विकास केन्द्र के बीच यह महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल बन सकता है।

बसामन मामा गौवंश वन्य विहार के शेष कार्यों को दस दिवस में करें पूर्ण : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि बसामन मामा गौवंश वन्य विहार में कार्ययोजना अनुसार फ्रंट एरिया डेवलपमेंट का कार्य करायें। पूर्व से निर्मित गौ शेड, भूसा शेड सहित अन्य सभी भवनों का रंग रोगन व मेंटीनेंस कराते हुए शेष निर्माणाधीन कार्यों को आगामी दस दिवस में अनिवार्यतः पूर्ण करें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने रीवा के बसामन मामा गौवंश वन्य विहार में गौवंश वन्य विहार के विकास कार्यों की समीक्षा की।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि बसामन मामा गौवंश वन्य विहार की प्रदेश में अपनी पहचान है। प्रयागराज में आयोजित हो रहे महाकुंभ के दौरान देश के महान मनीषी स्वामी अवधेशानंद गिरिजी, स्वामी रामदेव तथा पूज्य मोरारी बापू भी हेलीकाप्टर से बसामन मामा गौवंश वन्य विहार आयेंगे तथा संपूर्ण वन्य विहार का भ्रमण करेंगे अतः नियत समय में सभी कार्य पूरे हो जांय और गौवंश वन्य विहार आकर्षक व अप्रतिम दिखे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने गौवंश वन्य विहार में गोबर व गोमूत्र से निर्मित सामग्री को विक्रय किये जाने के लिये संबंधित संस्थानों से अनुबंध किये जाने के निर्देश दिये। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि बसामन मामा गौवंश वन्य विहार आर्थिक संसाधन हासिल कर आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर है अतः उत्पाद सामग्री का क्रय कराया जाना सुनिश्चित करायें। उन्होंने गौवंश वन्य विहार के लिये आवंटित चरनोई भूमि में चारा उत्पादन करने व विक्रय करने का दायित्व एफपीओ के माध्यम से कराने की बात कही ताकि इससे भी आमदनी हो सके। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने गौवंश वन्य विहार में सोलर पैनल लगाकर ऊर्जीकृत करने तथा मृत पशुओं के लिये निष्पादन इकाई लगाये जाने के लिये निर्देशित किया। उन्होंने हिनौती गौधाम में चल रहे निर्माण कार्यों की भी समीक्षा की।

रीवा जिला चिकित्सालय में सर्वसुविधायुक्त ऑपरेशन थियेटर में अत्याधुनिक मशीनों से होगा नेत्र रोग का उपचारः उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि जिला चिकित्सालय रीवा में सर्वसुविधायुक्त ऑपरेशन थियेटर में अब अत्याधुनिक मशीनों से नेत्र रोगियों का उपचार होगा तथा जटिल नेत्र सर्जरी भी की जायेगी।

भोपाल में दो दोस्तों को घेरकर फायरिंग, चाकू मारे

एक युवक के हाथ में लगी गोली, सिर में गहरे घाव; 2 बदमाश गिरफ्तार

भोपाल (नप्र)। भोपाल में दो दोस्तों को घेरकर चार बदमाशों ने फायरिंग की और चाकू से गंभीर वार किए। घटना ऐशबाग इलाके में शनिवार रात 11.30 बजे की है। एक युवक के हाथ में गोली लगी है। सिर पर भी चाकू का घाव है। दोनों युवक को हमीदिया अस्पताल लाया गया है। पुलिस ने रविवार को दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। ऐशबाग के जनता क्वार्टर में रहने वाले नफीस राजा (25) ने बताया कि वह मार्बल कटिंग का काम करता है। दिलकुश बाग में एक दोस्त रहता है। उससे मिलने के लिए दोस्त तंजीन के साथ मोपेड से जा रहा था। सोनिया कॉलोनी की तरफ जाते समय चार बदमाशों ने अपनी दो बाइक से टक्कर मारकर गिरा दिया।

किसी और से झगड़ रहे थे, उसका साथी समझकर टूट पड़ेः कुछ समझ पाते, इसके पहले एक बदमाश ने कट्टा निकाल कर फायर कर दिया। गोली बाएं हाथ की कोहनी में लगी है। इसके बाद

दूसरे बदमाश ने सिर पर चाकू से वार कर दिया। बदमाशों ने तंजीन पर भी चाकू से वार किए हैं। नफीस के मुताबिक, बदमाशों का मौके पर किसी और से विवाद चल रहा था। उन्होंने समझा कि हम लोग उनके साथी हैं। इसी शक में हमला कर दिया।

आदतन अपराधी हैं चारों आरोपीः हमला करने का आरोप अरबाज, अरमान इक्का, अमन बच्चा और फराज पर है। सभी के खिलाफ ऐशबाग सहित अन्य थानों में कई आपराधिक केस दर्ज हैं। ऐशबाग पुलिस ने अरबाज इक्का और अरमान को गिरफ्तार कर लिया है।

सौरभ शर्मा मामले में परिवहन विभाग के इन अधिकारियों की बढ़ सकती हैं मुश्किलें

सीएम मोहन यादव देंगे जांच के आदेश

भोपाल (नप्र)। परिवहन आरक्षक रहे सौरभ शर्मा के आवास और कार्यालय से करोड़ों रुपये मिले थे। उसके बाद से परिवहन चौकियों और परिवहन विभाग में अन्य मलाईदार पदों पर पदस्थ रहे पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों की जांच की तैयारी है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव जल्द ही ऐसे अधिकारी-कर्मचारियों की जांच नर्सिंग मामले की तरह करने के आदेश दे सकते हैं। सौरभ के घर और कार्यालय से जांच एजेंसियों को मिले दस्तावेजों से साफ हो गया है कि इसमें कई नेताओं से लेकर परिवहन विभाग के तत्कालीन कुछ अधिकारियों और आरटीओ का भी हाथ है। जिस कार में 54 किलो सोना और लगभग 10 करोड़ रुपये नकद मिला है, उसमें एक डायरी भी आयकर विभाग को मिली है। डायरी में कुछ परिवहन अधिकारियों और नेताओं के नामों का उल्लेख बताया जा रहा है। इससे साफ है कि परिवहन नाकों पर पदस्थापना से लेकर वसूली तक का खेल कई अधिकारियों की मिलीभगत से चलता था। सौरभ को आगे बढ़ाने में किन लोगों ने मदद की, यह भी जांच का विषय है।

वसूली का चल रहा था बड़ा खेलः वसूली का सबसे बड़ा खेल परिवहन चौकियों में ही हो रहा था। भोपाल में सौरभ शर्मा के कार्यालय से कई आरटीओ की सील और परिवहन चौकियों में उपयोग होने वाले खाली रसीद-कट्टे मिले

हैं। इससे संदेह जताया जा रहा है कि वह कई ऐसे काम भी करता रहा होगा, जो परिवहन विभाग के अधिकारी या आरटीओ के जिम्मे थे।

नर्सिंग कॉलेजों में गड़बड़ी के खिलाफ दिया था आदेशः बता दें कि डॉ मोहन यादव के मुख्यमंत्री बनने के कुछ दिन बाद ही प्रदेश के नर्सिंग कॉलेजों में गड़बड़ी का मामला उछला था। कांग्रेस ने तत्कालीन चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग के मंत्री पद से त्यागपत्र की मांग की थी। इसके बाद मुख्यमंत्री ने सख्त रुख अपनाते हुए मापदंड पूरा नहीं करने वाले कॉलेजों को मान्यता की अनुशंसा करने वाली पूरी टीम को जांच की परिधि में लेने के लिए कहा था। इसमें कई अधिकारियों के विरुद्ध विभागीय जांच प्रारंभ हो गई है।

स्कूल शिक्षा विभाग में पिछले 3 वर्ष में 35 हजार शिक्षकों की हुई भर्ती

20 हजार शिक्षकों को दिया गया उच्च पद प्रभार

भोपाल (नप्र)। स्कूल शिक्षा विभाग ने प्रदेश में सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिये पिछले 3 वर्षों में करीब 35 हजार रिक्त पदों पर शिक्षकों की नियुक्ति की है। यह कार्यवाही नई शिक्षा नीति-2020 का बेहतर क्रियान्वयन करने के उद्देश्य से की गयी है। नियुक्त शिक्षकों में उच्च माध्यमिक शिक्षक 15 हजार, माध्यमिक शिक्षक 7726 और प्राथमिक शिक्षक 12 हजार 539 शामिल हैं। इस प्रकार 35 हजार 265 शिक्षकों की नियुक्ति की गयी है। सरकारी स्कूलों में आवश्यकता अनुसार शिक्षकों की उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिये 20 हजार शिक्षकों को उच्च पद प्रभार और अतिशेष प्रक्रिया के अंतर्गत युक्ति-युक्तकरण में 17 हजार शिक्षकों को पारदर्शी प्रक्रिया को अपनाते हुए अन्यत्र स्थान पर पदस्थ किया गया है।

व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा

नई शिक्षा नीति-2020 में विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा दिलाये जाने की भी अनुशंसा की गयी है। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रदेश में सरकारी स्तर पर 2383 स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं। इनमें 4 लाख विद्यार्थी दर्ज हैं। इन्हें कौशल उन्नयन के उद्देश्य से 14 प्रकार के ट्रेड में प्रशिक्षण दिलाया जा रहा है। प्रदेश की 798 हायर सेकेण्डरी स्कूलों में कृषि संकाय और 465 हायर सेकेण्डरी स्कूलों में कृषि ट्रेड संचालित हैं। स्टार्स प्रोजेक्ट के अंतर्गत 100 स्कूलों में नियमित छात्रों के साथ-साथ ड्रॉप-आउट विद्यार्थियों की भी व्यावसायिक शिक्षा प्रारंभ की गयी है। कक्षा-9 में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत या उर्दू में से किसी एक भाषा का चयन एवं एक भाषा के स्थान पर तृतीय भाषा के स्थान पर विकल्प तथा कक्षा-11 में किसी भाषा के विकल्प के रूप में व्यावसायिक शिक्षा चयन का प्रावधान भी रखा गया है। विभाग द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को आज की व्यावसायिक और रोजगार की आवश्यकता को देखते हुए किसी न किसी ट्रेड में प्रशिक्षण दिलाया जाये।

लैब का निर्माणः प्रदेश में संचालित प्रत्येक सीएम राइज स्कूल में 2 वोकेशनल ट्रेड्स के लिये लैब निर्मित की जा रही हैं।

म.प्र.में अतिरिक्त स्टाम्प ड्यूटी से जनपद व ग्राम पंचायतों के कर्मचारियों को मिलेगी सैलरी

20 जनवरी से अमल होना शुरू हो जाएगा

भोपाल(नप्र)। मध्य प्रदेश सरकार ने जनपद और ग्राम पंचायतों के अधिकारियों और कर्मचारियों को वेतन-भत्ते और मानदेय का भुगतान करने के लिए अतिरिक्त स्टाम्प ड्यूटी की राशि का उपयोग करने के नए नियम जारी किए हैं। यह कदम पंचायत राज संस्थाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाएगा। यह नियम 20 जनवरी से अमल होना शुरू हो जाएगा। मध्य प्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम 1993 की धारा 75 के तहत स्टाम्प ड्यूटी पर एक प्रतिशत तक अतिरिक्त शुल्क लिया जा सकता है। इस राशि का उपयोग पंचायती राज संस्थाओं के कर्मचारियों के वेतन-भत्तों और मानदेय का भुगतान करने के लिए किया जाएगा। यह कदम पंचायत संस्थाओं को वित्तीय रूप से मजबूत बनाने के उद्देश्य से उठाया है, जिससे पंचायतों के कार्यों में किसी भी तरह की कोई रुकावट न आ सके।

नए साल पर एमपी के नेशनल पार्कों में बुकिंग फुल

6 टाइगर रिजर्व में कोर एरिया की सभी सीटें बुक; बफर एरिया घूम सकते हैं

भोपाल (नप्र)। न्यू ईयर पर मध्यप्रदेश के सभी टाइगर रिजर्व के कोर एरिया की सीट्स बुक हो चुकी हैं। नए साल पर वीकेंड नहीं होने के बावजूद टाइगर रिजर्व फुल हो गए हैं। हालांकि, बफर एरिया में अब भी कई सीटें खाली हैं। ऐसे में ऑनलाइन बुकिंग करके छुट्टियों का लुत्फ उठा सकते हैं।

प्रदेश में 6 पुराने टाइगर रिजर्व- सतपुड़ा टाइगर रिजर्व (एसटीआर), पेंच, संजय डुबरी, कान्हा, पन्ना और बांधवगढ़ हैं। वहीं, 3 नए रातापानी, माधौपुर और नौरादेही टाइगर रिजर्व बनाए गए हैं। इन सभी में टूरिस्ट पहुंच रहे हैं, जो टाइगर, हाथी समेत अन्य जानवरों के करीब से दीदार कर रहे हैं। वे न्यू ईयर सेलिब्रेशन भी पार्क में ही करेंगे। इसके चलते पार्क में फुल और सिंगल व्हीकल की बुकिंग हो चुकी है। कुछ सीटें अभी भी खाली हैं। तीन नए पार्क की ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा अभी शुरू नहीं हुई है। अभी एमपी में 785 से अधिक टाइगर हैं।

कहां-कहां सीटें खाली

सतपुड़ा टाइगर रिजर्वः पिपरिया, जामनी, मल्लूपुरा, पारसपानी, चूरना, मढ़ई और पानापानी गेट से एंट्री ले सकते

हैं। इनमें कोर एरिया के चूरना, मढ़ई और पचमढ़ी गेट से एंट्री कर सकते हैं। 30 दिसंबर से 2 जनवरी के बीच बफर एरिया में 4 से 12 फुल व्हीकल सीट तक खाली है, लेकिन कोर एरिया की सभी सीट्स बुक हैं। साथ ही सिंगल सीट को लेकर भी है। यदि आप जल्दी बुकिंग करा लेते हैं, तो घूम सकते हैं। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में करीब 60 टाइगर हैं।

पेंच नेशनल पार्कः यहां 8 गेट के जरिए पार्क में एंट्री की जा सकती है। कोर जोन के जमतारा, करमाझिरी और तोरिया गेट से फुल व्हीकल की सीटों में लंबी वेटिंग है। बफर जोन के गेटों से एंट्री के लिए ऐसी ही स्थिति है। चुनिंदा सीट ही खाली है।

कान्हा टाइगर रिजर्वः यहां कापा, खातिया, पेन, सीरोजा, कान्हा, किसली, मुक्की और सरही गेट से एंट्री पा सकते हैं। कोर जोन के कान्हा, किसली, मुक्की और सरही गेट से एंट्री नहीं मिल सकेगी, क्योंकि फुल व्हीकल और सिंगल सीट की बुकिंग हो चुकी है। बफर जोन में अब भी 2 से 14 सीट तक खाली है। कान्हा में 100 से अधिक टाइगर है।

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व : बांधवगढ़ के कोर एरिया खिटाऊली, मागाधी और तारा गेट से एंट्री नहीं मिल सकेगी, क्योंकि 30 दिसंबर से 2 जनवरी के बीच सभी स्लॉट बुक हो चुके हैं। बफर जोन में घूमने के लिए सीट्स नहीं मिलेगी। जोहिला गेट पर जरूर कुछ सीट खाली है। यहां भी 110 से अधिक टाइगर हैं।

भोपाल विज्ञान मेले में स्कूली बच्चों के इनोवेशन

बिना मिट्टी की खेती से लेकर शॉकर बूट तक के मॉडल्स की प्रदर्शनी

भोपाल (नप्र)। चार दिवसीय विज्ञान मेले में स्कूल और कॉलेज के बच्चों के इनोवेशन से भरे मॉडल्स की प्रदर्शनी के अलावा, परंपरागत मॉडल भी प्रस्तुत किए गए हैं। भोपाल के जंबूरी मैदान में आयोजित विज्ञान मेले में स्कूल और कॉलेज के बच्चों के इनोवेशन से भरे मॉडल्स की प्रदर्शनी के अलावा, परंपरागत मॉडल भी प्रस्तुत किए गए हैं। डिंडौरी से आए अगरिया जनजाति के लोगों ने लोहा बनाने की परंपरागत तकनीक को जिंदा रखने के लिए प्रदर्शनी लगाई। यह लोग कलेजी पत्थर से लोहा बनाते हैं।इसके अलावा स्कूली बच्चों ने भविष्य की जरूरत को समझते हुए घर में बिना मिट्टी के खेती करने के तरीकों, फायर फाइटर रोबोट और महिलाओं की सुरक्षा के लिए शॉकर बूट के मॉडल बनाए।

पत्थर से लोहा बनाने की पारंपरिक तकनीकः डिंडौरी से आए संतु सिंह मरावी ने बताया कि, उनके पूर्वज कलेजी पत्थर से लोहा बनाने की परंपरागत विधि का इस्तेमाल करते थे। इस प्रक्रिया में एक विशेष कोन (चिमनीनुमा संरचना) में आग जलाई जाती है। कोन के ऊपर लगी पट्टी पर कोयला और कलेजी पत्थर रखा जाता है। चमड़े से बने पायदान को पैरों से दबाकर हवा पैदा की जाती है, जो बांस के जरिए कोन में पहुंचती है। यह प्रक्रिया लगभग चार घंटे तक चलती है। अंत में, पत्थर के गलने से लोहा तैयार होता है। संतु सिंह ने बताया कि यह तकनीक आज भी उनकी जनजाति के लोग जीवित रखे हुए हैं।

कारोबारी ने 500 रुपए के लिए बेटे की हत्या की

मऊगंज में फंदे पर शव लटकाया; सुसाइड मानकर फाइल बंद करने वाली थी पुलिस

मऊगंज (नप्र)। मऊगंज में गल्ला व्यापारी ने 500 रुपए के लिए अपने ही बेटे की डंडा मारकर और गला दबाकर हत्या कर दी। मर्डर को सुसाइड दिखाने के लिए शव को फंदे पर लटका दिया। सुबह लोगों और पुलिस के सामने रोने का नाटक भी किया। पुलिस भी इसे सुसाइड मानकर फाइल बंद करने वाली थी, जबकि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में पता चला कि युवक की हत्या गला दबाने से हुई थी। आठ महीने बाद जब मामला सामने आया, तब अफसरों की आंखें खुलीं। आनन-फानन में हत्या का केस दर्ज किया गया।

पिता से पूछताछ करने पर पहले तो वह बरगलाने लगा। सख्ती करने पर उसने वारदात कबूल ली। घटना 7 अप्रैल 2024 की है। पुलिस ने 28 दिसंबर को आरोपी पिता बाबूलाल गुप्ता (45) को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पुलिस ने हत्या में इस्तेमाल नायलॉन की रस्सी और डंडा भी बरामद किया है।

पुलिस ने पीएम रिपोर्ट तक नहीं पढ़ी: 7 अप्रैल 2024 को वार्ड नंबर 10 में रहने वाले रोहित गुप्ता (20) का शव घर में फंदे पर मिला था। प्राथमिक जांच में पुलिस ने सुसाइड मानकर मर्ग कायम किया। पूछताछ में परिवार वालों ने भी किसी पर शक जाहिर नहीं किया। पुलिस ने भी मामले को गंभीरता से नहीं लिया। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट 7 मई 2024 को मिली। बड़ी बात यह है कि पुलिस ने रिपोर्ट पढ़ने की जहमत ही नहीं उठाई और 8 मई को केस में खात्मे के लिए फाइल भी तैयार कर ली।

खर्च के हिसाब को लेकर हुआ विवाद: आरोपी पिता बाबूलाल गुप्ता ने पुलिस को बताया, 'मेरे दो बेटे और एक बेटी है। बेटा रोहित गल्ला बेचने गया था। उसने 6 हजार रुपए का माल बेचा। इसमें से 500 रुपए दोस्तों पर खाने-पीने में खर्च कर दिए।

उज्जैन, ग्वालियर-चंबल में 3 दिन कोहरा

प्रदेश में बारिश और ओले ने बढ़ाई ठंडक, फिर बारिश की संभावना

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में दो दिन मावठा गिरा। अब अगले तीन दिन उज्जैन, ग्वालियर और चंबल में कोहरा रहेगा। रविवार को प्रदेश के दक्षिणी हिस्से- खरगोन, बुरहानपुर, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी और बालाघाट में कहीं-कहीं हल्की बारिश भी हुई है। इसके बाद पूरे प्रदेश में कड़ाके की ठंड का दौर शुरू हो जाएगा, जो पूरे जनवरी चलेगा। नए साल की पहली सुबह तेज सर्दी पड़ेगी। मौसम वैज्ञानिक प्रदीप कुमार गुप्ता ने बताया, पश्चिमी-उत्तरी भारत में वेस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव है। एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन भी गुजर रहा है। इस वजह से पिछले दो दिन तक ओले गिरे और बारिश हुई। रविवार से बारिश की एक्टिविटी कम होगी, लेकिन कुछ जिलों में बारिश होने के आसार हैं। इसके पहले प्रदेश में लगातार दूसरे दिन शनिवार को भी बारिश हुई। सुबह 8.30 से शाम 5.30 बजे तक आधे से ज्यादा एमपी में बारिश हुई। 9 घंटे में सबसे ज्यादा पानी रीवा में 4.2 इंच गिर गया। उमरिया, नर्मदापुरम, बैतूल, जबलपुर, नरसिंहपुर, भोपाल, खजुराहो, नौगांव, सतना, टीकमगढ़, दमोह, सीधी, खंडवा, पचमढ़ी, सागर, रायसेन, धार, इंदौर, मंडला में बारिश हुई। मंदसौर, नीमच, अशोकनगर, शिवपुरी, ग्वालियर, दतिया, भिंड, मुरैना, श्योपुर में भी कहीं हल्की तो कहीं तेज बारिश हुई। कई जगहों पर ओले भी गिरे। रात में भी बारिश का दौर जारी रहा।

42 जिलों के 250 शहर-कस्बों में बारिश: शुक्रवार रात और शनिवार को 42 जिलों के 250 शहरों और कस्बों में पानी गिरा। इनमें भोपाल, मुरैना, अशोकनगर, नीमच, शाजापुर, बैतूल, रतलाम, ग्वालियर, आगर-मालवा, मंदसौर, देवास, नर्मदापुरम, सीहोर, रायसेन, उज्जैन, विदिशा, खंडवा, राजगढ़, हरदा, इंदौर, श्योपुर, शिवपुरी, भिंड, दतिया, खरगोन, बड़वानी, गुना, अलीराजपुर, धार, सागर, पन्ना, छतरपुर, दमोह, कटनी, छिंदवाड़ा, जबलपुर, नरसिंहपुर, निवाड़ी, टीकमगढ़, सतना, सिवनी, रीवा जिले शामिल हैं। सबसे ज्यादा ढाई इंच बारिश मंदसौर जिले के गरोठ और देवास के सतवास में हुई। नर्मदापुरम शहर, सीहोर के नसरूल्लागंज और रायसेन के उदयपुर में 2 इंच से ज्यादा पानी बरस गया। ओले और बारिश के साथ आंधी भी चली।

अगले 2 दिन ऐसा रहेगा मौसम

30 दिसंबर- मंदसौर, नीमच, गुना, अशोकनगर, शिवपुरी, ग्वालियर, दतिया, भिंड, मुरैना, श्योपुर में कोहरा रहेगा।

31 दिसंबर- मंदसौर, नीमच, गुना, अशोकनगर, शिवपुरी, ग्वालियर, दतिया, भिंड, मुरैना और श्योपुर में मध्यम कोहरा रहेगा।

इस बार नवंबर - दिसंबर में रिकॉर्ड तोड़ चुकी ठंड इस बार नवंबर और दिसंबर में ही ठंड रिकॉर्ड तोड़ चुकी है। जनवरी से भी ठंडा दिसंबर रहा। भोपाल समेत कई शहरों में ठंड ने रिकॉर्ड तोड़ दिए। 9 दिन शीतलहर चली। भोपाल में दिसंबर की सर्दी ने 58 साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया। नवंबर में भोपाल में तो 36 साल का रिकॉर्ड टूटा है। इंदौर, उज्जैन, जबलपुर और ग्वालियर में भी पारा सामान्य से 7 डिग्री तक नीचे रहा।

पत्नी की गला दबाकर हत्या, फिर की आत्महत्या

नीमच में युवक ने 3 मिनट का वीडियो बनाया; पत्नी के सरपंच से अवैध संबंधों का जिक्र

नीमच (नप्र)। नीमच में एक युवक ने पत्नी की गला दबाकर हत्या कर दी। इसके बाद खुद भी फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। सुसाइड से पहले उसने स्थानीय बोली में करीब 3 मिनट का एक वीडियो भी बनाया है। इसमें उसने पत्नी के एक सरपंच से अवैध संबंधों का जिक्र किया है। घटना नीमच से 60 किलोमीटर दूर रामपुरा थाना क्षेत्र के बुज गांव की है।

रामपुरा थाना प्रभारी उमेश यादव ने बताया कि परिजन शनिवार रात 22 वर्षीय रेखा का शव लेकर आए थे। रविवार सुबह पति मनीष बंजारा का शव लाया गया। दंपती का 3 साल का बेटा है।

वीडियो में कहा-12वीं पास हूं, पत्नी इज्जत नहीं करती थी: वीडियो में युवक ने कहा- मेरा नाम मनीष कछावा (बंजारा) है। चार साल पहले मेरी शादी हुई थी। इसके बाद से ही पत्नी अपने मायके के सुरेश सरपंच नाम के युवक से बात करती थी। मेरे पास दोनों की बातचीत की रिकॉर्डिंग भी है। दो बार मैंने पत्नी को बात करते हुए पकड़ा। घर वालों को बताया तो उन्होंने समझाया कि धीरे-धीरे रिश्तों में सुधार हो जाएगा। वह हर बार 6 माह के लिए मायके चली जाती थी। मेरे घर वाले उसे मनाकर वापस ले आते। यह सब चलते हुए 3 साल हो गए। इस बीच पत्नी ने एक बालक को जन्म दिया। इसके बाद भी पत्नी सुरेश सरपंच के संपर्क में रही। मैं डिप्रेशन में चला गया। पत्नी रूठ कर मायके चली गई। सुरेश सरपंच का मेरे सास व ससुर से अच्छा व्यवहार था। इसलिए वे कुछ नहीं कहते थे। उसका मेरी ससुराल में लगातार आना-जाना रहता था। तबीयत खराब होने के बावजूद पत्नी ने रोटी नहीं दी। जब तबीयत ठीक हुई तो मैंने खिमला प्लांट में 2 से 3 महीने काम किया। पत्नी का खर्चा-पानी उठाया, तब भी वह रूठ कर मायके में बैठी रही। कुछ दिनों बाद काका के मृत्युभोज में आई। 12-13 दिन तक तो उसने मुझसे बात नहीं की। मैं 12वीं पास हूं। मैंने आईटीआई भी किया है, लेकिन वह मेरी पढ़ाई की इज्जत नहीं करती थी।

मालवा प्रांत के 'शक्ति संगम' में पहुंची साध्वी ऋतंभरा

बोली- हिंदू धर्म स्थलों पर सिर्फ हिंदू समाज का हो व्यापार,विधर्मियों को अधिकार नहीं

उज्जैन (नप्र)। विश्व हिंदू परिषद मातृशक्ति, दुर्गा वाहिनी मालवा प्रांत के ''शक्ति संगम' के अवसर पर साध्वी ऋतंभरा दीदी ने मीडिया से चर्चा करते हुए कहा कि हमारे तीर्थ स्थल और आराधना स्थल पर हिंदू समाज का ही व्यापार होना चाहिए। विधर्मियों को इसका अधिकार नहीं होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि यदि आप हज करने जाएं और मुसलमान न हों, तो आपको वहां प्रवेश नहीं मिलेगा। फिर हमारे यहां इतनी छूट क्यों दी जाती है? यह सबसे दुर्भाग्यपूर्ण है कि लोग छद्म नाम से हमारे यहां व्यापार कर रहे हैं। साध्वी ऋतंभरा ने कहा कि हमारे यहां देवों की आराधना के दौरान खान-पान की पवित्रता सबसे महत्वपूर्ण होती है। यदि यह व्यवस्था विधर्मियों के हाथ में रहेगी, तो कौन गारंटी देगा कि उसमें पवित्रता है या नहीं। इसलिए इसमें तुरंत बदलाव होना चाहिए। हमारे सभी तीर्थ स्थलों और आराधना स्थलों पर केवल उन्हीं का होना चाहिए जो भगवान को भगवान मानते हैं, भारत भूमि को माँ मानते हैं। उन्होंने कहा, जिनके विचित्र आचरण और व्यवहार हैं, उनके लिए यह उचित नहीं है। यह देखकर लगता है कि हमारे धार्मिक स्थलों की पवित्रता बनाए रखने के लिए तुरंत कार्यवाही होनी चाहिए।

मोहन भागवत के बयान पर दी प्रतिक्रिया

साध्वी ऋतंभरा ने मोहन भागवत के बयान पर कहा कि हमें कानून के माध्यम से अपने प्राचीन परंपराओं का पालन करने का अधिकार है। भारत में मंदिरों के ध्वस्त होने और हिंदू समाज पर हुए

अत्याचारों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि यह प्रयास उसी अतीत को सामने लाने का है।

स्त्रियों की सशक्तता पर दिया जोर

राजनेता हमारी रक्षा करने थोड़ी आएंगे। यदि अन्याय हो रहा है, तो उसका विरोध संगठित होकर करना होगा। राज्य अपना काम करता है और राष्ट्र अपना। स्त्री न अबला है, न असहाय; वह स्वयं सिद्ध और सक्षम है। आज यहाँ दुर्गाओं के जोश को देखकर यह विश्वास हो गया है कि स्त्री अपनी रक्षा स्वयं कर सकती है। उन्होंने कहा, संस्कारों का प्रबल होना बहुत जरूरी है। हर घर के अंदर संस्कारों का वातावरण बनाना चाहिए। आज दुर्गा वाहिनी और मातृशक्ति का संगम हुआ। यह संगम भगवती माता अहिल्याबाई होलकर के पुण्य स्मरण और मातृ वंदना के लिए था। इस अवसर पर हजारों दुर्गाएँ यहाँ एकत्रित हुईं। साध्वी ऋतुंभरा ने कहा, हमने यह संकल्प लिया है कि देश और धर्म पर जो भी चुनौतियाँ आएंगी, उन्हें हम स्वीकार करेंगे। भारत की भूमि सनातनी भूमि है और इसकी परंपरा में प्रदूषण नहीं होना चाहिए। उन्होंने देश के भीतर और बाहर हो रही घटनाओं पर भी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा, देश में होने वाली बहुत सी घटनाएँ मन को उद्वेलित कर देती हैं। बांग्लादेश में हिंदू स्त्रियों के साथ हो रहे अत्याचारों को देखकर यह लगता है कि स्त्री को सशक्त और स्वयं सिद्ध होना जरूरी है। उसे अपनी रक्षा स्वयं करने में सक्षम बनना होगा।

25 हजार महिलाएं शामिल हुई यात्रा में

उज्जैन में रविवार को विश्व हिंदू परिषद मातृशक्ति और दुर्गावाहिनी मालवा प्रांत के द्वारा 'शक्ति संगम' शौर्य यात्रा निकाली गई। इसमें लगभग 25,000 महिलाएं एकत्रित हुईं। शक्ति संगम का आयोजन त्रिवेणी संग्रहालय के पास महाकालेश्वर मंदिर के निशुल्क अन्नक्षेत्र में हुआ। यहां से शौर्य यात्रा प्रारंभ हुई, जो महाकाल लोक से होते हुए गुदरी, पटनी बाजार, गोपाल मंदिर, छत्री चौक, सराफा, कण्ठाल चौराहा, कोयला फाटक होकर सामाजिक न्याय परिसर पहुंची थी।

बड़वानी पुलिस ने राजस्थान के दो तस्करों को किया गिरफ्तार, 9 पिस्टल और 14 देशी कट्टे मिले

पुलिस की कार्रवाई से अपराधियों में मचा हड़कंप

बड़वानी (नप्र)। ऑपरेशन प्रहार के तहत अवैध हथियारों के खिलाफ निवाली पुलिस ने बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया। पुलिस ने राजस्थान के दो हथियार तस्करों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से अवैध हथियार जब्त किए गए। दोनों आरोपितों से पूछताछ जारी है। कार्रवाई को लेकर पुलिस अधीक्षिक जगदीश डावर ने बताया कि किसी बड़ी घटना को अंजाम देने के लिए हथियारों की तस्करी की जा रही थी। इसे बड़वानी पुलिस ने नाकाम किया। आपरेशन प्रहार के तहत थाना निवाली पुलिस ने अवैध फायर आर्म्स ले जाते हुए राजस्थान के दो बदमाशों को गिरफ्तार किया। इनके कब्जे से 23 हथियार जब्त किए गए। जिसमें नौ पिस्टल, 14 देशी कट्टे, 11 जिंदा कारतूस, चार खाली मैग्जीन, दो आईफोन कुल कीमती करीब सवा तीन लाख रुपये का सामान जब्त किया गया।

निवाली बेरियर के पास घूम रहे थे

मुखबिर द्वारा निवाली पुलिस को सूचना प्राप्त हुई थी कि दो व्यक्ति निवाली बेरियर के पास इधर-उधर घूम रहे हैं। मुखबिर की सूचना पर थाना प्रभारी निवाली उप निरीक्षक रामकृष्ण लौवंशी के नेतृत्व में थाना निवाली की टीम गठित कर भेजी गई। पुलिस टीम ने बैरियर के आसपास पहुंचकर मुखबिर द्वारा बताए गए हुलिए अनुसार दो संदिग्ध बदमाशों को घेराबंदी कर पकड़ा।

वीर पाजी ने दिए थे हथियार

पकड़े गए तस्करों के नाम शिवम उर्फ शिवा पुत्र गोपीसिंह रावत निवासी रूपारेल ग्राम राजौसी पोस्ट भवानी खेडा थाना नसीराबाद जिला अजमेर राजस्थान और इकबाल पुत्र शंकर खान निवासी नाडा की बाड़ी ग्राम राजौसी थाना नसीराबाद जिला अजमेर राजस्थान हाल 23 सेक्टर प्रतापनगर जयपुर राजस्थान है। आरोपितों ने बताया कि ये सभी अवैध हथियार थाना वरला क्षेत्र के उमर्ठी के वीर पाजी नामक व्यक्ति ने उपलब्ध कराए थे। इस पर पूछताछ जारी है।

कही-सुनी

निगम और पंचायत चुनाव पर छाये बादल

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार निगम और पंचायत चुनाव को लेकर अब तक रुख साफ़ नहीं कर पाई है। महापौर और जिला पंचायत अध्यक्षों के आरक्षण को लेकर जिस तरह तारीख बढ़ रही है, उससे साफ़ लग रहा है कि दोनों चुनाव जल्दी नहीं होने वाले हैं। चर्चा है कि नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव को लेकर भाजपा अभी अपनी जमीन मजबूत नहीं पा रही है। कहते हैं चुनाव से पहले भाजपा पंचायतों और निकायों में आधार जमाना चाहती है। 14 नगर निगमों में से 13 में अभी कांग्रेस नेता महापौर हैं। इसी तरह कई पालिका अध्यक्ष और जिला पंचायत अध्यक्ष भी कांग्रेसी हैं। अधिकांश नगर निगमों में महापौर का कार्यकाल जनवरी के पहले हफ्ते में खत्म होने जा रहा है, ऐसे में नगर निगमों में प्रशासकों की नियुक्ति तय मानी जा रही है। कहा जा रहा है कि जनवरी में स्थानीय निकायों के चुनाव न होने पर मतदाता सूची का लोचा भी आएगा। नए सिरे से पुनरीक्षण करना होगा। फरवरी से स्कूली परीक्षा भी शुरू हो जाएगी। इस कारण कहा जा रहा है कि निकाय और पंचायत चुनाव अप्रैल-मई तक के लिए खिसक सकता है। निकाय और पंचायत की तारीख भले तय नहीं हो पा रही, पर दावेदारों की होड़ तो लगनी शुरू हो गई है।

अगला प्रदेश भाजपा अध्यक्ष कौन होगा ?

भाजपा में इन दिनों संगठन चुनाव चल रहा है। अधिकांश मंडल अध्यक्षों की नियुक्ति हो चुकी है। इक्के-दुक्के जगह बचे हैं। बताते है विवाद या आपत्ति के चलते कुछ मंडल अध्यक्ष की घोषणा रुकी है। जिला अध्यक्षों और जिला प्रतिनिधियों को घोषणा जल्द होने की उम्मीद है। इसके बाद प्रदेश अध्यक्ष की घोषणा होगी। अरुण साव के मंत्री बनने के बाद पार्टी हाईकमान ने किरणदेव को करीब सालभर पहले प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बनाया था। प्रदेश में आदिवासी मुख्यमंत्री होने के कारण प्रदेश भाजपा अध्यक्ष का पद सामान्य या अन्य पिछड़े वर्ग के नेता को देने चर्चा है। किरण देव को मंत्री बनाए जाने की सुगबुगाहट है। बस्तर से अभी केदार कश्यप ही मंत्री हैं। बस्तर से किरण देव के अलावा और भी दावेदार हैं, ऐसे में किरण देव मंत्री नहीं बनते हैं, तो प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बने रह सकते हैं। किरण देव के मंत्री बनने की स्थिति में प्रदेश अध्यक्ष का पद किसी ओबीसी नेता को मिलने की चर्चा है।

डीजीपी के पैनल पर ग्रहण

छत्तीसगढ़ सरकार ने नए डीजीपी के लिए तीन अफसरों का पैनल भारत सरकार को भेजा था। पैनल में अरुणदेव गौतम, पवनदेव और हिमांशु गुप्ता का नाम यूपीएससी को गया था। कहते हैं यूपीएससी ने आपत्ति के साथ राज्य सरकार को प्रस्ताव लौटा दिया है। चर्चा है कि छत्तीसगढ़ के एक सीनियर आईपीएस द्वारा यूपीएससी को लिखे पत्र के बाद पैनल को वापस कर दिया गया। राज्य सरकार ने पहले डीजीपी के लिए विचार क्षेत्र में पांच अफसरों का नाम रखा था, बाद में दो नाम हटाकर यूपीएससी को प्रस्ताव भेजा गया। पहले विचार क्षेत्र में रखे एक अफसर ने ही पैनल को लेकर यूपीएससी के सामने आपत्ति की है। यूपीएससी से डीजीपी का पैनल लौटने का मतलब चयन प्रक्रिया पर ग्रहण लगना है। अब देखते हैं नया पैनल यूपीएससी को जाता है या फिर डीजीपी अशोक जुनेजा साहब की लाटरी लगती है। अशोक जुनेजा अभी एक्सटेंशन पर चल रहे हैं। छह फरवरी तक उनका कार्यकाल है।

स्वास्थ्य को सवारेंगे अमित कटारिया

कहते हैं न सब्र का फल मीठा होता है, ऐसा ही कुछ आईएएस अमित कटारिया के साथ हुआ। पोस्टिंग के लिए महीने भर से ज्यादा इंतजार के बाद 2004 बैच के आईएएस अमित कटारिया को सरकार ने स्वास्थ्य विभाग का सचिव बना दिया। बताते हैं आजकल स्वास्थ्य विभाग में मोटा बजट है। भारत सरकार से भी फंड आता है। स्वास्थ्य विभाग इन दिनों कुछ ज्यादा चर्चा में भी है। अमित कटारिया भारत सरकार में शहरी विकास विभाग में रहे हैं। वे कुछ महीने पहले ही केंद्रीय प्रतिनियुक्ति से लौटे हैं। दिल्ली से रायपुर लौटने के बाद वे छुट्टी पर चले गए थे। अमित कटारिया को राज्य के एक मंत्री का काफी पसंदीदा कहा जा रहा है। चर्चा है कि मंत्री के कनेक्शन के कारण उन्हें स्वास्थ्य जैसा बड़ा महकमा मिला है।

क्या भूपेश बघेल आ सकते हैं ईडी की जद में

शराब घोटाले में पूर्व मंत्री और कोंटा विधायक कवासी लखमा पर ईडी की नजरें टेढ़ी होने के बाद लोग कयास लगाने लगे हैं कि ईडी पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का भी दरवाजा खटखटा सकती है। शराब घोटाले में अभी कई अफसर सलाखों के पीछे हैं। ईडी ने शराब घोटाले में पहली बार राजनीतिक व्यक्ति को निशाने पर लिया है। ईडी ने कवासी के साथ कांग्रेस के एक नेता के घर पर भी रेड डाला है। ऐसे में माना जा रहा है कि ईडी शराब घोटाले की तह तक जाना चाहती है। कवासी लखमा को अक्षर ज्ञान नहीं है, ऐसे में आबकारी विभाग की फाइलों का निपटारा कौन करता था, इस पर भी सवाल उठ रहे हैं। चर्चा है कि ईडी प्यादों के सहारे राजा तक पहुंचना चाहती है।

सीएमओ में डॉ रमन की छाप

1997 बैच के आईएएस सुबोध सिंह के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के प्रमुख सचिव बनने के बाद मुख्यमंत्री सचिवालय में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह की छाप दिखाई देने लगी है। मुख्यमंत्री सचिवालय में 2005 बैच के आईएएस मुकेश बंसल भी आ गए हैं, उन्हें भी मुख्यमंत्री का सचिव बना दिया गया है। सुबोध सिंह और मुकेश बंसल दोनों ही डॉ रमन की सरकार में मुख्यमंत्री सचिवालय में रह चुके हैं। अभी मुकेश बंसल वित्त और सामान्य प्रशासन विभाग के भी सचिव हैं। सीएमओ में मुकेश बंसल की पोस्टिंग के बाद अब मुख्यमंत्री के चार सचिव हो गए हैं। आईएएस पी दयानंद, बसवराजू और आईपीएस राहुल भगत पहले से सचिव थे।

जीपी सिंह को पोस्टिंग का इंतजार

बहाली के बाद आईपीएस जीपी सिंह ने पिछले दिनों पुलिस मुख्यालय में ज्वाइनिंग दे दी। ज्वाइनिंग के बाद उन्हें अभी कोई जिम्मेदारी नहीं सौंपी गई है। 1994 बैच के आईपीएस जीपी सिंह अभी एडीजी स्तर के अधिकारी हैं। बर्खास्तगी के चलते वे प्रमोशन में पीछे छूट गए। उनके बैच के आईपीएस अधिकारी हिमांशु गुप्ता डीजी बन गए हैं।